HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, युगाब्द 5121, मई 2019

लोक सभा चुनाव 2019

लोकतन्त्र का महा त्योहार

मेरा वोट देश के लिए

मूल्य: 20/- प्रति

रजत जयंती समापन कार्यक्रम में मंच पर प्रस्तुति देते हिमरश्मि स.वि.मं. शिमला के विद्यार्थी

विशेषांक व कैलेंडर का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथिगण

रजत जयंती समापन कार्यक्रम में उपस्थित शिमला शहर के गणमान्य जन

बिलासपुर में विशेषांक व कैलेंडर विमोचन करते हुए किस्मत कुमार, प्रो. पी. एल. शर्मा व अन्य गणमान्य जन

जोगिन्द्र नगर में विशेषांक विमोचन करते हुए गणमान्य जन

सोलन में विशेषांक विमोचन करते हुए प्रेम सिंह, कश्मीर सिंह व अन्य गणमान्य जन

करसोग में विशेषांक विमोचन करते हुए डॉ. सेवक राम, विद्या सागर, आसाराम व अन्य गणमान्य जन

वर्ष:19 अंक : 05 | वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5121, मई 2019

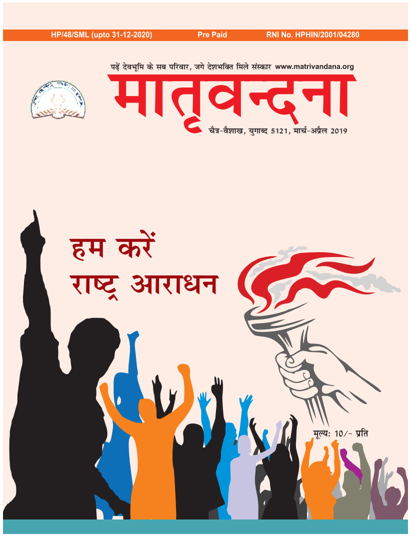

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
मीनाक्षी सूद
नीतू वर्मा
डॉ. अर्चना गुलेरिया

पत्रिका प्रमुख
शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

कार्यालय:
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990
E-mail: matrivandanashimla@gmail.com,
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक: कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सविता प्रैस, प्लॉट नं. 820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित। **सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय	*चुनाव में मतदाताओं की सजगता*	4
प्रेरक प्रसंग	*बिछुड़ों को मिलाता संगीत*	6
चिंतन	*मन की सजगता*	7
आवरण	*लोकतंत्र की जय का परचम*	8
संगठनम्	*नव संवत पर कुल्लू में हुई संगोष्ठी*	12
देश-प्रदेश	*आर्थिक क्षेत्र की महाशक्ति*	14
देवभूमि	*अद्भुत है सांचा विद्या*	16
पुण्य जयंती	*अमर बलिदानी: सुखदेव*	18
घूमती कलम	*श्याम स्याह छोड़ गया ब्लैक ईस्टर*	19
पुण्य स्मरण	*किश्तवाड़ के शहीद चंद्रकांत*	20
दृष्टि	*न्यायपालिका की नकारात्मक स्वतंत्रता*	22
काव्य जगत	*अकेला पार्थ*	23
स्वास्थ्य	*स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं*	25
प्रतिक्रिया	*एक युद्धनायक कर्नल रविन्द्रनाथ*	26
महिला जगत	*नारी युग के आगमन की शुरूआत*	27
विश्वदर्शन	*नासा के रोवर चैलेंज में छाए भारतीय*	31
विविध	*35ए व 370 धारा खत्म करना*	32
बाल जगत	*जानिए रात को क्यों गाने लगा मीठू*	33

पाठकीय

सम्पादक महोदय,

विकास के एवज में पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई विषय पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करता हुआ आपके माध्यम से जनसाधारण को बताना चाहता हूं कि आजकल जो मौसम में बदलाव हुआ है उसका मुख्य कारण केवल अन्धाधुन्ध पेड़ों की कटाई ही है। इसकी वजह से हमारी ओजोन पर्त भी हर वर्ष कमजोर होती जा रही है और नए-नए रोगों का जन्म हो रहा है। जंगलों से अन्धाधुन्ध कटाई के कारण ही जानवर आजकल किसानों के खेतों को तबाह कर रहे हैं। जिसकी वजह से किसान हर वर्ष बिजाई वाली जमीन को छोड़ता जा रहा है। एक ऐसा भी समय था जब बहुत से उपयोगी पेड़-पौधों की भारतवर्ष में पूजा होती थी लेकिन अब पेड़ों का महत्व सिर्फ पैसा कमाना ही रह गया है। इसका ताजा उदाहरण अभी पिछले दिनों ही मण्डी के करसोग क्षेत्र का है, जहां एक वन रक्षक इसी वजह से एक पेड़ से लटकता हुआ मिलता है। अगर इसी प्रकार इनका कटान होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे हरे क्षेत्र रेगिस्तान में तबदील हो जाएंगे, मौसम में बड़े बदलाव आएंगे। अत: आपके माध्यम से मैं समाज के लोगों व जन प्रतिनिधियों सहित सरकार से आग्रह करता हूं कि इस पर कुछ ऐसे सख्त कानून बनाए जाएं ताकि वृक्षों का अवैध कटान रुक सके। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में हर वर्ष एक पेड़ लगाने का संकल्प लेना जरूरी है, अपने वातावरण को बचाने और सुरक्षित रखने के लिए। ◆◆◆

प्रवीण कुमार शर्मा, पालमपुर

महोदय,

मैं एक कवि, लेखक एवं पत्रकार हूँ। मेरी उम्र 53 वर्ष है, मैं स्व. श्री रूल्दू व माता श्रीमती रेशमी देवी गांव व डा0 महादेव सुन्दरनगर मण्डी हि0प्र0 का स्थानीय निवासी हूँ। मातृवन्दना में छपे देहदान के समाचार से प्रेरित होकर मैंने राजकीय लाल बहादुर शास्त्री मैडिकल कॉलेज नेरचौक मण्डी में देहदान कर दी है।

देहदान समिति ने मेरा आवेदन मंजूर करते हुए क्रमांक 85 में नाम पता आदि दर्ज किया है। मैंने देहदान संबंधी प्रपत्र कुल छ: पृष्ठ भरकर जमा करवा दिया है। मैंने अपने घर में इस विषय की तमाम चर्चा अपनी पत्नी, बेटी और बेटे के साथ कर ली है। मेरे बड़े भाई पूर्व सैन्य अधिकारी कवि, लेखक एवं साहित्यकार, छोटा भाई, सबसे बड़ी बहन जो सामाजिक कार्यों से जुड़े हैं से प्रेरणा पाकर दादा जी जो बड़े क्रान्तिकारी समाजसेवी रहे हैं के पदचिन्हों पर चलकर ही मैंने देहदान करने का फैसला लिया है। सेना में रहते हुए मुझे वीरगति पाने का मौका तो नहीं मिला मगर अब इस नश्वर शरीर के बारे में सोच विचार किया कि क्यों न डॉक्टरी ट्रेनिंग कर रहे बच्चों के लिए देहदान करूं ताकि उनकी अच्छी प्रैक्टिस हो और अच्छे डॉक्टर बन वे रोगियों की सेवा कर सकें। देहदान समिति ने मुझे पहचान-पत्र भी जारी कर दिया है। ◆◆◆ **भीम सिंह परदेसी**

मई माह के शुभ मुहूर्त

तारीख	दिन	मुहूर्त का समय
1 मई	बुद्धवार	प्रात: 05:31 से दिन 02:30
5 मई	रविवार	रात्रि 03:56 से रात्रि 05:28
10 मई	शुक्रवार	प्रात: 05:26 से दिन 02:04
25 मई	शनिवार	प्रात: 05:18 से दिन 09:56
26 मई	रविवार	प्रात: 05:18 से प्रात: 07:38
30 मई	गुरुवार	प्रात: 05:16 से रात्रि 09:51
31 मई	शुक्रवार	प्रात: 05:16 से रात्रि 11:20

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990, 7650000990
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्रमिक दिवस, परशुराम जयंती, बुद्ध पूर्णिमा व देवर्षि नारद जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (मई)

श्रमिक दिवस	1 मई
छत्रपति शिवाजी जयंती	6 मई
भगवान परशुराम जयंती	7 मई
मोहिनी एकादशी	15 मई
भगवान नृसिंह जयंती	17 मई
भागवान बुद्ध जयंती	18 मई
देवर्षि नारद जयंती	20 मई

चुनाव में मतदाताओं की सजगता आवश्यक

लोकतन्त्र उस शासन व्यवस्था का नाम है जिसमें जनता द्वारा चुनी हुई सरकार हो। चुनी हुई सरकार लोकतन्त्र के लिए आवश्यक है। लोकतन्त्र एक चिन्तन शैली, एक मनोविज्ञान और समग्र राष्ट्र जीवन को सुखी और सफल बनाने की एक आदर्श युक्ति है। लोकतन्त्र की मूल धारणा में जनता का कल्याण, उत्थान और जनहित की भावना है। चुनाव लोकतन्त्र के सूत्रधार हैं, ये जनता को अपना प्रतिनिधि चुनने का अवसर प्रदान करते हैं। किन्तु चुनाव लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का एक चरणमात्र है। यह मात्र एक माध्यम है, जो इस बात का निर्धारण करता है कि जनता किसे शासन का उत्तरदायित्व सौंपना चाहती है। लोकतन्त्रीय विचारधारा का सही अर्थ समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि लोकतन्त्र की आत्मा और शरीर पृथक-पृथक हैं। चुनाव प्रक्रिया वास्तव में लोकतन्त्र का शरीर है। लोकतन्त्र की आत्मा का सम्बन्ध लोकतन्त्रीय शासन व्यवस्था के मूल उद्देश्य उसके सार एवं उनकी पूर्ति हेतु अपनाए जाने वाले उपायों के पृष्ठ में छिपी भावना से है। गांधी जी का कहना था कि लोकतन्त्र वह है जिसमें गरीब से गरीब, दुर्बल से दुर्बल व्यक्ति को भी उतने ही अवसर प्राप्त हों, जितने अमीर से अमीर और सबल से सबल व्यक्ति को मिलते हैं। लोकतन्त्र का आधारभूत तत्व अधिक से अधिक व्यक्तियों का अधिकतम कल्याण है। इसी भावना को अधिमान देते हुए प्रत्येक मतदाता का यह कर्तव्य बन जाता है कि वह अपना वोट अवश्य डाले।

लोकतन्त्र की सफलता निष्पक्ष चुनावों पर निर्भर करती है। भारतीय लोकतन्त्र की यह सबसे बड़ी विशेषता बन गई है कि यहां की चुनाव प्रक्रिया पारदर्शी है। चुनावों की निष्पक्षता पर राजनीतिक दलों को और मतदाताओं को पूरा भरोसा है। इस वर्ष 17वीं लोकसभा के गठन के लिए सात चरणों में 90 करोड़ मतदाता बटन दबाकर अपने लोकतान्त्रिक अधिकार का प्रयोग कर रहे हैं। अन्तिम चरण के चुनाव शेष हैं। 18 से 19 साल के 1.5 करोड़ युवा मतदाताओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। 8.43 करोड़ नए मतदाता भी देश के भविष्य निर्माण में सहभागी बनेंगे। यह चुनाव सतारूढ़ भाजपा अथवा एन.डी.ए. दल की अग्नि परीक्षा है तो कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों के लिए सत्ता में वापसी हेतु अवसर और चुनौती है। भारतीय जनता पार्टी ने देश की सुरक्षा, राष्ट्रवाद, मजबूत अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार निवारण, विकास, विदेश नीति, आतंकवाद और हिन्दुत्व के मुद्दों पर चुनाव प्रचार करते हुए बीते पांच वर्षों का लेखा-जोखा जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है और अपनी उपलब्धियों को भी गिनाया है। भाजपा को पूर्ण विश्वास है कि जनता उसे बहुमत से जिताएगी। भारत के प्रधानमंत्री मोदी सर्वाधिक लोकप्रिय नेता के रूप में उभर कर सामने आए हैं। कांग्रेस व विपक्षी दलों का महागठबंधन तथा अन्य क्षेत्रीय दल मात देने के लिए एकजुट होकर सत्तापक्ष की उपलब्धियों को झूठा साबित करने का प्रयास एवं प्रचार कर रहे हैं। दुर्भाग्य की बात है कि लोकतन्त्र की मूल भावना की अवहेलना करते हुए सभी राजनीतिक दल आरोप-प्रत्यारोप पर उतर आये हैं, सिद्धान्तों की बात कोई नहीं करता। लोक-लुभावन घोषणा-पत्र प्रस्तुत कर ये पार्टियां मतदाताओं को भ्रमित कर रही हैं। आज जनता जागरूक है, वह सोच-समझ कर अपने मत का प्रयोग कर रही है। वास्तव में सत्ता उसी राजनीतिक दल के हाथ में आनी चाहिए जिसने सचमुच कुछ नया करके दिखाया है और राष्ट्र का सर्वांगीण विकास कर उसे सुदृढ़ता प्रदान करने का प्रयास किया है। चुनाव के अन्तिम चरणों में मतदाता अपने मत का प्रयोग करने जा रहे हैं। हमारे प्रदेश में भी चुनाव का अन्तिम चरण 19 मई को है और लोक सभा के चार सांसदों के लिए वोट डाले जाएंगे। हिमाचल का मतदाता शिक्षित एवं सजग है, वह अपने मत का सही प्रयोग करेगा, ऐसा विश्वास है।

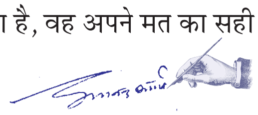

बिछुड़ों को मिलाता संगीत

... सोमी प्रकाश भुव्वेटा

मानें या न मानें, संगीत बिछुड़ों को भी मिलाता है। ऐसा ही किस्सा चंबा में सामने आया है। जिला मुख्यालय पर एक भटका हुआ अनजान व्यक्ति एक दुकान के बाहर कई दिन खड़े होकर कुछ निहारता दिखता है और फिर थोड़ी देर रुकने के बाद वहां से चला जाता है। ऐसा 1-2 दिन नहीं बल्कि पूरे एक सप्ताह तक चलता रहा।

इतने दिन लगातार इस व्यक्ति की हरकत को देखकर दुकानदार व आसपास के लोग भी हैरान रह गए, क्योंकि इस व्यक्ति की नजर एक ही दुकान पर रहती थी। एक दिन दुकानदार ने उससे इसका कारण पूछ ही लिया। दुकान में काम करने वाले देशराज के ऐसा पूछने पर अनजान व्यक्ति ने मुस्कराते हुए दुकान पर टंगी गिटार की तरफ इशारा किया। दुकान के भीतर मौजूद चंदन सूरी इस अनजान व्यक्ति के इशारे को समझ गए और उन्होंने इस व्यक्ति को अपनी दुकान के भीतर बुला लिया। दुकान के भीतर बुलाकर जैसे ही उसे दीवार पर टंगा गिटार थमाया तो उसने वहीं स्टूल पर बैठ कर सुरों की ऐसी तान छेड़ी कि सब हैरान रह गए।

सुरों की तान इतनी मधुर थी कि दुकान के भीतर और बाहर हुजूम उमड़ पड़ा। उसके बाद पूरे 10 दिन तक अपनी रूटीन के हिसाब से दुकान पर ये व्यक्ति पहुंचता और गिटार उठाकर तराने छेड़ता रहा। चंबा में भूले-भटके पहुंचे इस व्यक्ति की पहचान तब तक गौण रही जब तक गिटार बजाने को नहीं मिला। कुछ लोगों से दोस्ती होने पर गुमसुम रहने वाला यह व्यक्ति अपना नाम नर बहादुर बताते हुए घर का पता सिर्फ दार्जिलिंग ही बताता था।

इस व्यक्ति के सुरों के तरानों के मुरीद लोग अब इसे अपनों से मिलाने की ठान चुके थे। नर बहादुर युवा दुकानदार चंदन, देशराज, संदीप कुमार, हनी और खान चाय वाला समेत आसपास के अन्य लोगों का 10 दिन में ही खास बन गया। एक दिन नर बहादुर ने अपने दिमाग पर जोर डाला और अपने एरिया के एमएलए का नाम उसकी जुबान पर आ गया। उसके बाद उसने अपनों के बीच जाने की इच्छा जताई। सोशल मीडिया के माध्यम से नर बहादुर के एरिया के विधायक से बात हुई और फिर थाने में दर्ज नर बहादुर की गुमशुदगी से मालूम पड़ा कि वह कहां से है। थाने से कनेक्शन जुड़ने पर एक दिन नर बहादुर के परिजनों ने अपने लाडले से बात की और उसके बाद स्वयं उसे लेने चंबा पहुंचे। नर बहादुर को सकुशल पाकर परिजनों ने उसे मिलाने वालों का आभार व्यक्त किया है। परिजन बताते हैं कि मानसिक रूप से परेशान नर बहादुर काफी अरसे से लापता था। हर जगह तलाश करने पर कहीं भी उसका सुराग नहीं मिलने पर उन्होंने गुमशुदगी की रिपोर्ट लिखवा दी थी। ◆◆◆

मन की सजगता

... चेतन कौशल

मानव का मन जो उसे नीच कर्म करने से रोकता है, विपदा आने से पूर्व सावधान भी करता है, वह स्वयं बड़े रहस्यमयी ढंग से एक ऐसे आवरण में छुपा रहता है जिसके चारों ओर विषय, वासना और विकार रूपी पहली, दूसरी, तीसरी और चौथी एक के पश्चात् एक परत चढ़ी रहती है। जब मनुष्य अपनी निरंतर साधना, अभ्यास और वैराग्य के बल से उन सभी आवरणों को हटा देता है, आत्मा का साक्षात्कार कर लेता है, उसे पहचान लेता है और यह जान लेता है कि वह कौन है? क्यों है? तो वह समाज का सेवक बन जाता है। उसकी मानसिक स्थिति एक साधारण मनुष्य से भिन्न हो जाती है।

मनुष्य का मन उस जल के समान है जिसका अपना कोई रंग-रूप या आकार नहीं होता है। कोई उसे जब चाहे जैसे वर्तन में डाले वह अपने स्वभाव के अनुरूप स्वयं को उसमें व्यवस्थित कर लेता है। ठीक यही स्थिति मनुष्य के मन की है। चाहे वह उसे अज्ञानता के गहरे गर्त में धकेल दे या ज्ञान के उच्च शिखर पर ले जाए, ये उसके अधीन है। उसका मन दोनों कार्य कर सकता है, सक्षम है। इनमें अंतर मात्र ये है कि एक मार्ग से उसका पतन होता है और दूसरे से उत्थान। इन्हें मात्र सत्य पर आधारित शिक्षा से जाना जा सकता है। संसार में भोग और योग दो ऐसी सीढ़ियां हैं जिन पर चढ़कर मनुष्य को भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है। यह तो उसके द्वारा विचार करने योग्य बात है कि उसे किस सीढ़ी पर चढ़ना है और किस सीढ़ी पर चढ़ कर उसे दु:ख मिलता है और किससे सुख। महानुभावों का अपने जीवन में यह भली प्रकार विचार युक्त जाना-पहचाना दिव्य अनुभव रहा है कि बुराई संगत करने योग्य

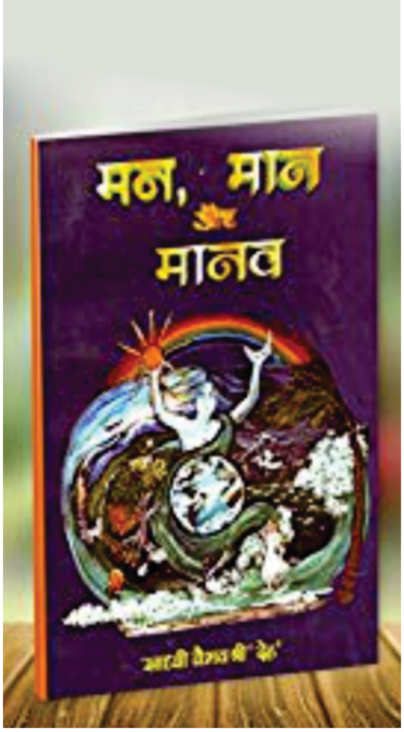

वस्तु नहीं है। भोग-चिंतन कुसंगति का बुलावा है। भोग-चिंतन करने से मनुष्य बुरी संगत में पड़ता है। बुरी संगत करने से बुरी भावना, बुरी भावना से बुरे विचार, बुरे विचारों से बुरे कर्म पैदा होते हैं जिनसे निकलने वाला फल भी बुरा ही होता है।

बुराई से दूर रहो, इसलिए नहीं कि आप उससे भयभीत हो। वह इसलिए कि दूर रहकर आप उससे संघर्ष करने का अपना साहस बढ़ा सको। मन को बलशाली बना सको। इंद्रियों को अनुशासित कर सको। मनुष्य द्वारा अपने मन को भोग से योग में लगाना सम्भवत: एक बहुत बड़ी तपस्या है-भौतिक सुख में लिप्त रहने वाले मनुष्य को वर्तमान काल में ऐसा करना बहुत कठिन लगता है। ये उसकी अपनी दुर्बलता है। जब तक वह अपने आप को बलशाली नहीं बना लेता, तब तक वह स्वयं ही बुराई का शिकार नहीं होगा बल्कि उससे उसका कोई अपना हितैषी बंधु भी चैन की नींद नहीं सो सकता। मनुष्य भोग बिना योग और योग बिना भोग सुख को कभी प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि उसे भोग में योग और योग में भोग का व्यवहारिक अनुभव होना नितांत आवश्यक है। वह चाहे शिक्षण-प्रशिक्षण से जाना गया हो या क्रिया अभ्यास से ही सिद्ध किया गया हो। अगर जीवन में इन दोनों का मिला-जुला अनुभव हो जाए तो वह एक अति श्रेष्ठ अनुभव होगा। इसके लिए कोरा शिक्षण-प्रशिक्षण जो आचरण में न लाया जाए, नीरस है। कोरा क्रिया अभ्यास जिसका शिक्षण-प्रशिक्षण किए बिना, आचरण किया गया हो-आनन्द रहित है। जिस प्रकार साज और आवाज के मेल से किसी नर्तकी के पैर न चाहते हुए भी अपने आप थिरकने आरम्भ हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ-साथ उसका आचरण करने से मनुष्य जीवन भी स्वयं ही सभी सुखों से परिपूर्ण होता जाता है।

प्राचीनकाल में ही क्यों, आज भी हमारे बीच में ऐसे कई महानुभाव विद्यमान हैं जो आजीवन अविवाहित रहने का प्रण किए हुए हैं और दूसरे गृहस्थ जीवन से निवृत्त होकर उच्च सन्यासी हो गए हैं या जिन्होंने तन, मन और धन से वैराग्य ले लिया है। उनका ध्येय स्थितप्रज्ञ की प्राप्ति अथवा आत्मशांति प्राप्त करने के साथ-साथ सबका कल्याण करना होता है। इनके रास्ते भले ही अलग-अलग हों पर मंजिल एक ही होती है। वह ब्रह्मचारी या सन्यासी जिसकी बुद्धि किसी इच्छा या वासना के तूफान में कभी अडिग न रह सके, वह न तो ब्रह्मचारी हो सकता है और न ही सन्यासी। उसे ढोंगी कहा जाए तो ज्यादा अच्छा रहेगा-क्योंकि ब्रह्मचारी किसी रूप को देखकर कभी मोहित नहीं होता है और सन्यासी किसी का अहित अथवा नीच बात नहीं सोच सकता जिससे उसका या दूसरे का कोई अहित हो। अपमानित तो वही होते हैं जो इन दोनों बातों से अनभिज्ञ रहते हैं या वे उनकी उपेक्षा करते हैं। इसलिए समाज में कुछ करने के लिए आवश्यक है अपने प्रति अपनी निरंतर सजगता बनाए रखना और ऐसा प्रयत्न करते रहना जिससे जीवन आत्मोन्मुखी बना रहे। ◆◆◆

लोकतंत्र की जय का परचम

... सुशील कुमार

दुनिया की अन्य विचारधाराओं में ऐसी स्थिति नहीं है। बल्कि इसके उलट, उन मत/मतान्तरों में वैचारिक मतभिन्नता को जबरन दबाकर अपना मत लादने का प्रयास होता है। दुनिया का इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। अपने मत को दूसरों पर थोपने का सबसे घिनौना उदाहरण भी हमारे सम्मुख है। इस्लाम का चिन्तन है। वीर हकीकत राय और गुरु गोविन्द सिंह के दोनों छोटे साहबजादों से बढ़कर कौन सा उदाहरण हो सकता है।

3 मार्च के कई समाचार-पत्रों में एक छोटा सा समाचार प्रकाशित हुआ है। मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा ने चुनाव कार्यक्रम की घोषणा करते हुए बताया कि गुजरात के जूनागढ़ जिले में एक ऐसा भी मतदान केन्द्र है, जिसमें केवल एक मतदाता पंजीकृत है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ व अरुणाचल प्रदेश में दो और तीन मतदाताओं के लिए भी मतदान केन्द्र बनाए गए हैं। सतही तौर पर देखने से यही लगेगा कि यह फिजूल खर्चा है, यह अव्यवहारिकता है, यह बेमानी है। यद्यपि कभी-कभी हार जीत भी एक-दो मतों से हो जाती है, पर यह अपवादस्वरूप भी इतनी बड़ी संख्या में मतदाताओं के होने से कठिन है।

प्रश्न मतदाताओं की संख्या या इतनी कम संख्या में मतदाता होने पर भी मतदान केन्द्र बनाने का नहीं है, यह लोकतंत्र की जय का परचम है। लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति के मत का महत्व होता है। हमारे यहां इसकी प्रखर परंपरा रही है। महत्व हिन्दुत्व की विचार प्रक्रिया का भी है। हिन्दू चिन्तन प्रणाली में प्रत्येक व्यक्ति को सोचने और अपना मत व्यक्त करने का महत्व समझा गया है। धोबी का सामान्य काम करने वाला भी सर्वलोकोपकारी भगवान राम के मत से अपना भिन्न मत रख सकता है। मत विभिन्नता के कारण न उसे अपमानित किया जाएगा न ही प्रताड़ित। दुनिया की अन्य विचारधाराओं में ऐसी स्थिति नहीं है। बल्कि इसके उलट, उन मत/मतान्तरों में वैचारिक मतभिन्नता को जबरन दबाकर अपना मत लादने का प्रयास होता है। दुनिया का इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। अपने मत को दूसरों पर थोपने का सबसे घिनौना उदाहरण कट्टरता का चिन्तन है। वीर हकीकत राय और गुरु गोविन्द सिंह के दोनों छोटे साहबजादों से बढ़कर कौन सा उदाहरण हो सकता है। कम्युनिस्टों की क्रूरता और भिन्न विचार रखने के कारण लाखों/करोड़ों लोगों की हत्या का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। सांस्कृतिक सुधार के नाम पर उन्होंने क्या कुछ नहीं किया। नाजियों के गैस चैम्बरों को कौन भूल सकता है? तात्पर्य यह है कि हिन्दू चिन्तन का औदार्य यहां की भारतीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था में मूर्तिमान रूप में दिखाई पड़ता है। दूसरे के मत को न केवल प्रकट करने देना, बल्कि उसे सम्मान की दृष्टि से देखना, यही संभव है। अपने इतिहास के स्वर्ण युग में भी हम कभी तलवार लेकर विध्वंस करने नहीं गए, हमने पुस्तकालय नहीं फूंके, उसके लिए आर्थिक सहायता की व्यवस्था की। (संदर्भः बख्तियार खिलजी द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय के महाकाय पुस्तकालय को जला डालना तथा चीनी यात्री को भेंट स्वरूप दी गई पुस्तकों को बचाने के लिए बटुकों द्वारा ब्रह्मपुत्र में जल समाधि)।

स्वार्थी लोग भले ही हिन्दू को अतिवादी या हिंसक बताने का भरसक प्रयत्न करते हों पर यह हम ही कर सकते हैं कि एक नागरिक का मत जानने के लिए एक पूरी मतदान पार्टी वहां भेजी जाएगी।

चुनाव की गहमागहमी में हिन्दू आतंकवाद/भगवा आतंकवाद पर गढ़ी गई कहानियों का पदार्फाश न्यायालय के निर्णयों से हो गया है। दिनांक 7 नवम्बर 2008 की समाचार - समीक्षा में जिस प्रकार की आशंका व्यक्त की गई थी वह शत - प्रतिशत सही साबित हुई है।

जो बंधु इस विषय की व्यापक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें दैनिक जागरण दिनांक 23 मार्च में श्री अवधेश कुमार का विस्तृत लेख 'असीमानंद के बरी होने का मतलब' अवश्य पढ़ना चाहिए। न्यायालयों के निर्णयों, विभिन्न घटनाओं की तारीखें और न्यायिक प्रक्रिया की पूरी जानकारी वहां है। बड़े-बड़े दीखने वाले राजनेताओं के चेहरे कितने विद्रूप हैं- यह भी प्रयान में आएगा। और भी कि किस प्रकार विश्वव्यापी मुस्लिम आतंकवाद के समानान्तर सहिष्णु और उदार हिन्दुत्व को खड़ा करने की नाकाम कोशिश की गई। अभी-अभी नाभिकीय सुरक्षा व्यवस्था में भारत ने जो अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है और अपना देश दुनिया के तीन अन्य देशों के साथ खड़ा हो गया है। ◆◆◆

देश-द्रोहियों के मताधिकार ?

... विनोद बंसल

चुनाव नजदीक आते ही राजनीतिक दलों व नेताओं में वाकयुद्ध प्रारम्भ हो जाता है। एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते हुए अनेक बार, शब्दों की सीमाएं, न सिर्फ संसदीय मर्यादाएं बल्कि, सामान्य आचार संहिता का भी उल्लंघन कर जाते हैं। राजनैतिक दलों के सिद्धान्तों, कार्यों व कार्यशैली पर प्रश्नचिन्ह लगाना तथा एक दूसरे की कमियों को उजागर करते हुए स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा तो ठीक है किंतु उनकी शब्द रचना भारतीय संस्कृति, संवैधानिक व्यवस्थाओं व लोकाचार के भी परे, जब भारत की एकता व अखंडता के साथ उसकी संप्रभुता पर भी हमला करने लग जाए तो पीड़ा का असहनीय होना स्वाभाविक ही है।

यूं तो कश्मीर से सम्बंधित अलगाववादी संवैधानिक धारा 370 व 35 ए को हटाने की मांग दशकों पुरानी है तथा वर्तमान सत्ताधारी दल इनको हटाने के लिए प्रारम्भ से ही कृत संकल्पित है। इस संबध में एक याचिका भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय में लंबित है। हाल ही में देश के वित्त मंत्री अरूण जेटली ने कहा था कि धारा 370 व 35 ए का हटाया जाना न सिर्फ कश्मीर समस्या के समाधान बल्कि वहां व्याप्त भेदभाव को समाप्त कर कश्मीर समस्या के सम्पूर्ण समाधान व अलगाववाद को समाप्त करने में कारगर कदम होगा और हम 2020 तक इस लक्ष्य को पूरा कर लेंगे। वहीं अलगाववादियों और पीडीपी तथा नेशनल कॉंफ्रेंस जैसे दलों ने धमकी भरे स्वरों में जिस प्रकार भारत जैसे महान व दुनिया के सर्वोच्च लोकतंत्र की संप्रभुता पर सीधा हमला करते हुए संविधान के अनुच्छेद 370 व 35 ए को हटाने पर जम्मू कश्मीर के भारत से अलग हो जाने की धमकी देने का जो दुस्साहस किया, वह किसी भी देशभक्त के लिए बेहद कष्टकारक था। उनके द्वारा एक नहीं अनेक भाषणों में कश्मीर घाटी के अलगाववादी वातावरण में जिस प्रकार तीखा जहर घोला गया उससे न सिर्फ देशद्रोहियों के हौसले बुलंद हुए, आंतकवादियों और अलगाववादियों को प्रोत्साहन मिला बल्कि लगे हाथ पाकिस्तान ने भी उनके इन बयानों पर तालियां बजाते हुए एक बार पुन: कश्मीरी राग अलाप डाला।

ध्यान रहे ये वही राजनेता हैं जिन्हें भारत के कर दाताओं के खून पसीने की कमाई से दिये गए कर में से वेतन, भत्ते, गाड़ी-बंगले, पेंशन व सुरक्षा के साथ अनेक प्रकार की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सुविधाएं मिलती हैं। भारत सरकार द्वारा जारी पासपोर्ट ही इनकी पहचान है। किन्तु फिर भी ये राजनेता स्थानीय जनता को सांप्रदायिक आधार पर भड़काकर वोट बटोरने का जो बेहद ओछा व गहरा षड्यंत्र रचते हैं वह न सिर्फ चुनाव आचार संहिता का गंभीर उल्लंघन है बल्कि देश की संवैधानिक संस्थाओं, संसद व संविधान पर भी सीधा हमला है। संपूर्ण भारत इन नेताओं की भारत विरोधी धमकियों से बेहद आहत है। किन्तु फिर भी देश को तोड़कर अलग विधान, अलग निशान व अलग प्रधान की बात करने वालों के विरूद्ध, मात्र एक राजनैतिक दल को छोड़कर, किसी भी अन्य राजनैतिक दल या उनके कथित गठबंधन के किसी भी सदस्य ने आज तक एक शब्द तक नहीं बोला कि देश तोड़ने की बात कहने का उनका दुस्साहस कैसे हुआ? आखिर क्यों? हम जानते हैं कि ऐसी ही एक चुप्पी ने एक बार भारत विभाजन को जन्म दिया था। स्वतन्त्रता से पूर्व के एक अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने जब वंदेमातरम का विरोध किया तब तत्कालीन नेताओं ने उसका मुखर विरोध कर उसे गाने को विवश किया होता तो न तो मां भारती के टुकड़े होते और न ही आज शायद ये दिन देखने पड़ते। खैर! इन नेताओं की देश विरोध पर चुप्पी का कारण तो देश की जनता समझ ही रही है किंतु, संवैधानिक संस्थाओं की इतने संवेदनशील मुद्दे पर गहरी चुप्पी भी समझ से परे है। बात-बात पर राजनेताओं व राजनैतिक दलों तथा यहां तक कि गैर राजनैतिक संस्थाओं को भी चुनाव आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के नाम पर जाने कितने कितने नोटिस, एफआईआर और उनसे भी अधिक कड़े कदम उठाते हुए भारत के चुनाव आयोग को हमने देखा है। 1999 में तो बाला साहेब ठाकरे का मताधिकार व चुनाव में खड़े होने तथा चुनाव प्रचार करने का अधिकार तक सिर्फ इसलिए 6 वर्षों के लिए चुनाव आयोग ने छीन लिया था क्योंकि उन्होंने एक चुनाव सभा में मुस्लिम समुदाय के विषय में कोई टिप्पणी कर दी थी। ◆◆◆

आवरण

चाहे अनचाहे बनता रहा मुद्दा

... गुंजन कुमार

हर बार चुनावों के दौरान भगवान राम की अग्नि परीक्षा होती रही है। चुनावों के समय अचानक राम की याद आ जाना कोई राकेट साइंस नहीं है, जिसे समझना मुश्किल हो। रामचरित मानस के लंका-कांड में गोस्वामी तुलसीदास ने रावण वध का जिक्र करते हुए मंदोदरी के मुख से कहलवाया है कि-'राम विमुख अस हाल तुम्हारा, रहा न कोऊ कुल रोवन हारा।' लगता है कि मंदोदरी की यह बात हमारे देश के नेताओं को भली-भांति समझ में आ गयी है। परिणाम स्वरूप उन्होंने निश्चय कर लिया है कि किसी भी चुनाव के समय वे राम से विमुख नहीं होंगे।

अयोध्या और श्री राम जन्मभूमि न चाहते हुए भी किसी न किसी तरह चुनावी मुद्दा बन ही जाता है। पिछले तीन दशकों में एक भी ऐसा चुनाव नहीं बीता, जिसमें अयोध्या व राम जन्मभूमि का मुद्दा न उछला हो। राम के नाम पर बहुत सारे लोग सत्ता के शीर्ष तक पहुंच गये लेकिन राम जन्मभूमि का मुद्दा जस का तस बरकरार है। कड़ाके की ठंड, जोरदार बारिश और प्रचंड गर्मी झेलते हुए तिरपाल के नीचे अपना जीवन गुजार रहे भगवान राम ऐसे चुनावी चक्रव्यूह में फंस गये हैं जिससे निकलने की फिलहाल कम से कम कोई सूरत तो नहीं ही दिखाई दे रही है। बहरहाल, 6 दिसंबर 1992 के बाद से ही तिरपाल के नीचे अपने अच्छे दिनों का इंतजार कर रहे भगवान राम को अभी और प्रतीक्षा करनी होगी। पिछले 26 सालों में सरयू में बहुत पानी बह चुका है लेकिन अभी भी भगवान राम अपने लिए एक अदद घर के लिए तरस रहे हैं। इस बार सुप्रीम कोर्ट से विशेष उम्मीद थी। उम्मीद इस बात की कि इस बार न्यायालय उनके साथ जरूर न्याय करेगा और उन्हें एक स्थायी घर मुहैया कराएगा। हालांकि ऐसा संभव नहीं हो पाया। बावजूद इसके कि न्यायालय का काम है निर्णय करना। न्यायालय ने निर्णय करने के बजाय समझौते का रास्ता अख्तियार किया है।

सर्वोच्च न्यायालय ने मामले के शांतिपूर्ण समाधान के लिए अंतिम कोशिश के तौर पर अपनी निगरानी में मध्यस्थता का प्रयास किया है। ऐसे में साफ है कि राजनीतिक रूप से संवेदनशील इस मामले को कोर्ट से बाहर सुलझाने की हरसंभव कोशिश की जाएगी। शीर्ष न्यायालय ने इस बाबत 3 सदस्यीय पैनल भी गठित कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज जस्टिस एफएम कलीमुल्ला इस पैनल के चेयरमैन बनाये गये हैं। समिति के अन्य मध्यस्थों में आध्यात्मिक गुरू श्री श्री रविशंकर और वरिष्ठ वकील श्रीराम पांचू शामिल हैं। खास बात यह है कि मध्यस्थता के जरिए मामले को सुलझाने की प्रक्रिया 8 हफ्ते में पूरी की जाएगी। कोर्ट ने फैजाबाद में ही मध्यस्थता को लेकर बातचीत करने के निर्देश दिए हैं। जब तक बातचीत का सिलसिला चलेगा, पूरी बातचीत गोपनीय रखी जाएगी। इसको लेकर मीडिया रिपोर्टिंग पर भी पाबंदी लगा दी गई है। समिति अपने काम में लग गई है। अभी हाल ही में समिति ने अयोध्या का दौरा कर कुछ लोगों से बातचीत की।

अयोध्या की गंभीरता और देश की राजनीति पर इस मध्यस्थता के नतीजे के असर से वाकिफ होने के बावजूद सुप्रीम कोर्ट चाहता है कि बातचीत के रास्ते ही अयोध्या विवाद का हल निकले। हालांकि मध्यस्थता से इसका कोई हल निकल पायेगा, इसकी उम्मीद बेहद क्षीण ही है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसके पहले भी कई बार मध्यस्थता की कोशिशें हो चुकी हैं, लेकिन हर बार नतीजा सिफर ही निकला। नये पैनल के सदस्य श्री श्री रविशंकर साल 2017 में इसी तरह की कवायद कर चुके हैं। नतीजा वही ढाक के तीन पात वाला ही रहा। इस बार सुप्रीम कोर्ट ने कमान संभाली है, तो उम्मीद जताई जा रही है कि संभवत: भगवान राम का वनवास खत्म हो सके। मैत्रीपूर्ण तरीके से विवाद के निपटारे से संबंधों को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है। लेकिन क्या ऐसा संभव हो पाएगा, सौ टके का सवाल यही है। ◆◆◆

संसदीय संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व नगण्य

... हितेन्द्र शर्मा

राजनीतिक विज्ञान 'आम आदमी' की चिंता में शायद 'आम औरत' शब्द अपने शब्दकोश में शामिल करना ही भूल गए। हिमाचल प्रदेश के लगभग 51 लाख से भी अधिक मतदाताओं की सूची में आधी महिलाएं हैं और पुरुषों की तुलना में महिलाओं के मतदान का प्रतिशत भी अधिक रहता है। दुर्भाग्यवश महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को सिर्फ वोट डालने तक ही सीमित रखा गया है। हिमाचल प्रदेश विधानसभा में भी महिलाओं की भागीदारी नाममात्र की है।

महिलाओं के प्रति राजनीतिक दलों की गंभीरता महिला आरक्षण बिल से ही साफ हो जाती है। 33 फीसदी महिला आरक्षण का ज्ञान बांटने वाले सभी राजनैतिक दल और नेता देवभूमि की चार लोकसभा सीटों पर एक भी महिला को अपना प्रत्याशी नहीं बना सके। क्या विधानसभा, लोकसभा और मंत्रिमंडल में महिला प्रतिनिधित्व की कमी भारतीय राजनीति में अभी भी पुरुषवादी सोच का प्रतीक नहीं है? दलील कि टिकट तो पार्टी हाईकमान, पार्टी/संगठन के समर्पित नेताओं को ही प्रदान करते हैं, भले ही नेताजी पार्टी में आज ही क्यों न शामिल हुए हों क्योंकि जो उम्मीदवार जीतने की क्षमता रखता है सभी राजनीतिक दल उसके सामने नत मस्तक रहते हैं। दोहरे चरित्र वाले यह राजनैतिक योद्धा चुनावी रैलियों व बैठकों को सफल बनाने के लिए भी महिलाओं के नृत्य प्रदर्शन को हथियार बनाकर मैदान में भीड़ जुटाते हैं। यदि महिलाओं की भागीदारी इसी तरह से कम रही तो यह बेहद चिंताजनक है। क्योंकि महिलाएं अब अपने मताधिकार का अधिक इस्तेमाल करने लगी हैं। समाज में संतुलित विकास बनाए रखने के लिए लिंग समानता बहुत जरूरी है। ◆◆◆

खुशियों का ताल्लुक दौलत से नहीं

नूरपुर में कुछ महाविद्यालयीन छात्रों ने मिलकर एक संगठन की स्थापना की। इस संगठन ने संपूर्ण प्रदेश के लिए एक मिसाल पेश की है। अवसर था एक स्थानीय निर्धन कन्या के विवाह की संपूर्ण व्यवस्था का संचालन और वह भी बिना किसी राजनीतिक दल व बाह्य सहयोग के। विवाह के लिए साधन जुटाए तो समाज के बल पर वास्तव में अपने आप में यह सामाजिक समरसता की अनूठी मिसाल भी है। विगत कई वर्षों से यह संगठन कुछ विशेष तिथियों पर सेवा के कार्यक्रम आयोजित करता है। कॉलेज में पढ़ने वाले छात्र ही आपसी सामंजस्य के आधार पर राशि एकत्र कर समाज निर्माण के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य कर रहे हैं। सामाजिक समरसता, अपनी संस्कृति तथा परम्पराओं की झलक 21 अप्रैल को हुए इस विवाह में मिली। बारातियों को भोजन करने से पहले सामूहिक रूप से भोजन मंत्र करते पहली बार देखा। गाना और बजाना हारमोनियम के साथ खुद गाकर था, पत्तल उठाने के लिए कोई अलग से ना होकर, स्वयं विद्यार्थी उठा रहे थे। सब कुछ unnatural था, समाज की सज्जन शक्ति और कॉलेज में पढ़ने वाले युवा साथी अपने आप को सौभाग्यशाली समझ रहे थे की वे न केवल जाति-पाति के बंधन को दूर करने में लगे हैं, अपितु अपनी उच्च सांस्कृतिक धरोहर को समाज को प्रेरणा देने वाला एक दायित्व का निर्वहन भी कर रहे है। पौरोहित्य कर्म में सक्रिय स्थानीय बन्धुओं ने भी समाज में पनपी रूढ़ी की विकृत्ति का चश्मा उतार कर सबको एक समान देखने की दूरदृष्टि ने विवाह में उपस्थित वर-वधू पक्ष सहित सबका मन मोह लिया। ◆◆◆

नव संवत पर कुल्लू में हुई संगोष्ठी

... डॉ. सूरत ठाकुर

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर 6 अप्रैल 2019 को देवसदन कुल्लू में स्व0 जगदेव चंद शोध संस्थान नेरी, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी तथा भारतीय इतिहास संकलन समिति कुल्लू द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें हिन्दू संस्कृति में नव संवत् की परंपरा पर विद्वानों ने अपने विचार रखे। इस संगोष्ठी के अध्यक्ष पूर्व प्राचार्य डॉ बलबीर सिंह ठाकुर थे। उन्होंने कहा कि हमारे पुरखों ने हर परंपरा सोच समझ कर चिंतन करने के बाद ही आरम्भ की है। हमारे सनातन धर्म में भोजन करने से पूर्व अग्नि, गौ माता तथा कौवे को भोजन का कुछ भाग देने की परंपरा रही है। यह परंपरा विज्ञान पर आधारित है। उन्होंने बताया कि भोजन सही बना है या नहीं इसे आग की लपटों के रंग से समझा जा सकता है।

मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उत्तर क्षेत्रीय शारीरिक शिक्षण प्रमुख संजीवन कुमार ने कहा कि नया संवत का आरंभ सृष्टि के आरंभ से ही हुआ है। आज से एक अरब पंचानवे लाख वर्ष पूर्व इसका आरम्भ हुआ था। वह ब्रह्मा का प्रथम दिन था। इसलिए विश्व के सभी धर्मों के नए वर्षों की परंपरा में हमारी नव वर्ष की परंपरा सबसे प्राचीन है। हिन्दू परंपरा में इसे सृष्टि संवत, कलि संवत्, विक्रमी संवत्, शक संवत् के नाम से जाना जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि सृष्टि का पुनः सृजन महाराज मनु ने मनाली से किया था। इसलिए मनाली में मनुधाम बनाने की योजना है, जिसे शीघ्र ही मूर्तरूप दिया जाएगा। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के कार्यकारिणी सदस्य एवं स्व0 जगदेव चंद शोध संस्थान के निदेशक चेतराम ने कहा कि भारतीय कालगणना विश्व में सबसे प्राचीन है। यह नासा ने भी सिद्ध किया है। सभी हिंदुओं का कर्तव्य बनता है कि अपने इस पुरातन सांस्कृतिक उत्सव को धूमधाम से मनाया जाये। हमारी आने वाली पीढ़ी पश्चिमी देशों की चकाचौंध में अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूलती जा रही है। हमें इन्हें अपनी संस्कृति की खूबियों से अवगत करवाने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी बताया कि नेरी शोध संस्थान भारत के मूल इतिहास को खोजने का प्रयास कर रहा है। हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी के सदस्य एवं नेरी शोध संस्थान के वैचारिक प्रमुख डॉ ओम प्रकाश शर्मा ने नए संवत् के शास्त्रों में वर्णित पहलुओं पर अपना उद्बोधन दिया। इन्होंने बताया कि समय का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति में वैज्ञानिक ढंग से विवेचित किया गया है। हिमाचल कला संस्कृति के सचिव डॉ कर्म सिंह ने कहा कि अकादमी हर वर्ष इस दिन संगोष्ठी का आयोजन किया करेगी। कुल्लू में इसी दिन विरशु गीतों पर चरासा नृत्य करने की परंपरा है, अतः इस कार्यक्रम में महिला मंडल कमांद की महिलाओं ने चरासा नृत्य की भावविभोर करने वाली प्रस्तुति दी। ◆◆◆

ओला वृष्टि से सेब के बागवानों का करोड़ों का नुक़सान

जिला शिमला के रोहड़ू विकास खंड के टिक्कर की ग्राम पंचायत दरारा, मंडल गढ़ की समरकोट, नसरी सुंगरी। विकासखंड चिड़गांव के बाली, झखनोटी, चिलाला, पुजारली रंसार वेली के गुमना, टी प्रोली अंबोई, थाना। चौपाल विकास खंड व ठियोग विकास खंड, रामपुर विकास खंड, नारकंडा विकास खंड, जुब्बल कोटखाई विकास खंड, अन्य हिमाचल प्रदेश। अन्य विकास खंड के क्षेत्रों में ओला वृष्टि से सेब के बागवानों का करोड़ों का नुक़सान हुआ। विशेषज्ञ का कहना है कि तीन सालों तक सेब की फसल को भारी नुक़सान होता है। भारतीय किसान संघ हिमाचल प्रदेश, प्रदेश सरकार से निवेदन करता है कि ओला वृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों को संभावित विभाग द्वारा सर्वे कर सेब के बागवानों को उचित अनुदान दिया जाए तथा किसान संघ प्रदेश सरकार से पुनः अनुरोध करता है कि सेब की फसल को बीमा के अंतर्गत लाया जाए। किसान क्रेडिट कार्ड के अंतर्गत किसानों से बैंक द्वारा जो बीमा बिना किसानों कि अनुमति से फसल बीमा राशि काटी जाती है उसे अविलम्ब बंद जाए। यह राशि बिना किसान कि अनुमति से ना काटी जाए, उन्हें उनका पूरा मुआवजा दिया जाए। ◆◆◆ **सुरेश ठाकुर, भारतीय किसान संघ प्रदेश महामंत्री**

लघु उद्योग भारती के स्थापना दिवस पर कांगड़ा इकाई का गठन

... संजीव कौशल

अखिल भारतीय औद्योगिक संगठन लघु उद्योग भारती का 25वां रजत जयंती स्थापना दिवस पालमपुर में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर उद्योगपतियों के एक विशाल सम्मेलन का आयोजन नगरी औद्योगिक क्षेत्र में किया गया जिसकी अध्यक्षता लघु उद्योग भारती के प्रदेश महामंत्री राजीव कंसल ने की। इस अवसर पर पूरे प्रदेश विशेषकर कांगड़ा जिले के उद्यमियों की समस्याओं पर मंथन किया। सभी ने अपने अपने कार्यक्षेत्र में आ रही समस्याओं की चर्चा की और कहा कि सरकार द्वारा उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा जिससे उनके उत्थान में रुकावटें आ रही है। कांगड़ा इकाई के अध्यक्ष नीरज गुप्ता ने कहा कि नगरी इंडस्ट्रियल एरिया में उद्योगों को जो भूमि दी गई है वह समतल नहीं है और उसको विकसित करने में लाखों रुपये खर्च करने पड़ रहे हैं और इतने में नई कंपनी लग सकती है। उपाध्यक्ष आशीष गुप्ता ने कहा कि बैंक उनको वित्तीय सहायता देने में आनाकानी करते हैं जिससे उनके सूक्ष्म एवं लघु यूनिट संकट में हैं जबकि बड़े-बड़े उद्योगों को फौरन लोन दे दिया जाता है। महिला उद्यमी तृप्ता ने कहा कि फायर एनओसी लेने के लिए हमें दर दर भटकना पड़ता है और छोटे उद्योग इसकी औपचारिकताएं पूरी नहीं कर पाते। इसका सरलीकरण होना चाहिए। सभी उद्यमियों ने कहा कि जीएसटी तो अच्छा है लेकिन सरकार समय पर इसका रिफंड नहीं दे रही है जिससे उनका सरकार के पास लाखों रुपये जमा है। फूड संचालक उद्यमियों ने कहा कि फूड उत्पाद पर कहीं तो 5, कहीं 12 व कहीं 18 फीसदी जीएसटी है जो कि तर्कसंगत नहीं है इसको एक ही सलैब में रखा जाना चाहिए। अपने संबोधन में प्रदेश महामंत्री राजीव कंसल व प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेंद्र जैन ने कहा कि जो भी समस्याएं आई हैं उनको केंद्र तथा प्रदेश सरकारों को भेज दिया जाएगा। हम चाहते हैं कि प्रदेश के हर कोने में लघु उद्योगों का विकास हो ताकि युवाओं को घरद्वार ही रोजगार मिल सके। कार्यक्रम के विशेष अतिथि हिमाचल प्रदेश यूनियन आफ जनर्लिस्टस के राज्याध्यक्ष रणेश राणा ने कहा कि लघु उद्योग

पूरे देश में सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध कराते हैं इसलिए सरकार को समय रहते इनका संरक्षण व संवर्धन करना चाहिए। लघु उद्योगों के लिए अलग पॉलिसी बननी चाहिए। इस अवसर पर प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अनिल मलिक, अशोक राणा, एसडीओ बिजली प्रवीण कुमार, ईओ इंडस्ट्रीज सोमा देवी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर सर्वसम्मति से लघु उद्योग भारती कांगडा इकाई का गठन किया गया जिसमें नीरज गुप्ता को अध्यक्ष, नरेश पाधा को महासचिव, रक्षकपाल को कैशियर, आशीष गुप्ता, शैलेंद्र मैनी व राजेश गुप्ता को उपाध्यक्ष, तृप्ता व सुधा को महिला विंग का संयोजक बनाया गया। इसके अलावा जिन लोगों ने संगठन की आजीवन सदस्यता ग्रहण की उनमें रुबलशम डोगरा, अनिल मलहोत्रा, प्रिंस गुप्ता, कविता, अश्विनी कुमार, रवि कुमार, सरंपच डायरी, दुर्गा आईस, सौरभ, जगंदबा ऑटो, सुरभि स्वीटस, दुर्गा बॉडी बिल्डर, बैजनाथ फार्मा, जोगिंद्रा स्वीटस, कुशमंदा टिंबर व जानवी उद्योग शामिल थे। ◆◆◆

संस्कृत भारतम्   श्रीः   समर्थभारतम्

संस्कृतभारती, हिमाचलप्रदेशः (न्यासः)

विवेकानन्दकेन्द्रम्- नाभा शिमला, जिला- शिमला, हिमाचलप्रदेशः 171004
samskritabharati-hp@gmail-com दूरभाषा-9418462710

प्रशिक्षणवर्गः 2019, युगाब्दः 5121

आत्मीयबन्धो !

"स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्" इत्यौपनिषदीमाज्ञाम् अनुपालयन्त्या संस्कृतभारत्या मई-जूनमासयोः संस्कृतशिक्षणाभ्यासाय, देवभूमौ हिमाचलप्रदेशे संस्कृतप्रसाराय, कार्यकर्ताणां प्रशिक्षणकौशलवर्धनाय च प्रशिक्षणवर्गः आयोज्यते । वर्गेऽस्मिन् संस्कृतसम्भाषणस्य अभ्यासः, संस्कृतसम्भाषणशिविरचालनस्य प्रशिक्षणं, संस्कृतमाध्यमेन संस्कृतपाठनकौशलस्य प्रशिक्षणं च भविष्यति ।

अर्हता	वर्गः	अवधिः	शुल्कम्
कृतावासीयवर्गाः	प्रशिक्षणवर्गः	ज्येष्ठकृष्णषष्ठीतः - ज्येष्ठशुक्लद्वितीयापर्यन्तम् 24 मई शनिवासरसायंकालतः 5 जून 2019 बुधवासरप्रातः पर्यन्तम्	700/-

स्थानम् : राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानं वेदव्यासपरिसरः बलाहरः, प्रागपुरं, जिला- कांगड़ा, हि.प्र.
सम्पर्कसूत्रम्- डा.जयकृष्णः 9910672036,
श्रीसञ्जीवः 9459532142, श्रीरोहितः - 8352990091

आर्थिक क्षेत्र की महाशक्ति भारत

स्वदेशी जागरण मंच के इंटेलेक्चुअल मीट जयपुर में वक्ताओं ने कहा कि भारत अब विश्व की प्रमुख पांचवी आथिक महाशक्ति बन गया है। पांच वर्ष पहले भारत ग्यारहवें स्थान पर था और इन 5 वर्षों में आर्थिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ भारत ने अपनी स्थिति सुदृढ़ की है। आने वाले कुछ वर्षों में भारत विश्व की सबसे बड़ी तथा सबसे तेज गति से विकसित होने वाली अर्थव्यवस्था के रूप में पूरे विश्व के सामने आने वाला है। ये विचार प्रसिद्ध स्वदेशी आर्थिक चिंतक सतीश कुमार ने सहकार मार्ग स्थित सेवा सदन में आयोजित इंटेलेक्चुअल मीट 'वर्तमान परिस्थितियों में नया भारत' विषय के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होने कहा कि अर्थव्यवस्था मे गति के लिए अनेक कारक हैं। उन्होंने कहा कि कोई भी राष्ट्र सुरक्षित हुए बिना आर्थिक प्रगति नहीं कर सकता। सतीश कुमार ने कहा कि पिछले वर्षों में पूरा विश्व भारत को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखने लगा है। पूरे विश्व में भारत तथा सनातन संस्कृति के प्रति आदर का भाव बढ़ा है। आगे उन्होने बताया कि कल्याणकारी योजनाएं केंद्र सरकार ने लागू भी की है। आयुष्मान भारत पूरे विश्व की स्वास्थ्य के क्षेत्र में सबसे बड़ी योजना है। इसी प्रकार मुद्दा योजना तथा उज्वला योजना भी भारत के आम नागरिकों के लिए बहुत लाभदायी योजनाएं हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय अध्यक्ष गुरुचरण सिंह गिल ने कहा कि वर्तमान समय राजनीतिक विचारों को समझने और समझकर श्रेष्ठ विचार को समर्थन देने का समय है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए PG कामर्स कॉलेज निदेशक राजीव सक्सेना ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में देश में जबकि लोकसभा चुनाव चल रहा है हमारा मत तय करेगा कि देश की भावी दिशा और दशा कैसी होगी। देश को विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ाने के लिए ऐसे विचार का ही समर्थन करना चाहिए जो राष्ट्र की सुरक्षा के साथ कोई समझौता न करे। ◆◆◆

इस बूथ पर हुई 100 प्रतिशत वोटिंग

कहां

गुजरात के जूनागढ़ लोकसभा क्षेत्र के गिर मतदान केन्द्र पर 100 प्रतिशत मतदान हुआ। दरअसल, यहां एक ही मतदाता है और सरकार ने इस एक मतदाता के लिए अलग से बूथ बनाया है। इस मतदाता का नाम भरत दास बापू है। भरत दास ने वोट डालने के बाद कहा कि सरकार ने सिर्फ एक मतदाता के लिए पोलिंग बूथ बनाने के लिए खर्चा किया है। ऐसे में मेरी भी जिम्मेदारी बनती है। मैंने वोट डाला और इस तरह इस मतदान केन्द्र पर 100 प्रतिशत वोटिंग हुई। बापू ने कहा कि हर बूथ पर 100 प्रतिशत मतदान होना चाहिए। उन्होंने लोगों से अधिकाधिक संख्या में वोट डालने की अपील की है। उल्लेखनीय है कि तीसरे चरण के लिए 116 सीटों पर मतदान हुआ है। पहले और दूसरे चरण में 91 एवं 95 सीटों के लिए मतदान हुआ था। ◆◆◆

राफेल पर राहुल गांधी ने सुप्रीम कोर्ट में जताया खेद'

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने राफेल फैसले पर बयान को लेकर बीजेपी सांसद मीनाक्षी लेखी द्वारा दायर अवमानना याचिका के संबंध में सोमवार (22 अप्रैल) को सुप्रीम कोर्ट में अपना जवाब दाखिल किया। कांग्रेस अध्यक्ष ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल अपने जवाब में 'चौकीदार चोर है' बयान को लेकर शीर्ष अदालत में खेद जताया है। गांधी ने सुप्रीम कोर्ट में 'चौकीदार चोर है' के नारे पर खेद जताते हुए कहा कि चुनाव प्रचार के जोश में उन्होंने यह बयान दे दिया था। बता दें कि राहुल गांधी ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा नए दस्तावेजों के आधार पर राफेल डील पर पुनर्विचार याचिका स्वीकार किए जाने को 'चौकीदार चोर है' के रूप में पेश किया था। सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को नोटिस जारी करते हुए 22 अप्रैल तक जवाब दाखिल करने को कहा था। राहुल गांधी पर सुप्रीम कोर्ट के बयान को गलत तरह से पेश करने का आरोप है। बीजेपी सांसद मीनाक्षी लेखी ने राफेल सौदे पर हाल ही में दिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर टिप्पणी करने के लिए राहुल गांधी के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई करने की 12 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी। लेखी का आरोप है कि कांग्रेस अध्यक्ष ने सुप्रीम कोर्ट के हवाले से ये बयान दिया है कि 'सुप्रीम कोर्ट ने भी माना है कि चौकीदार चोर है।' लेखी ने अपनी याचिका में आरोप लगाया है कि कि राहुल गांधी ने अपनी निजी टिप्पणियों को शीर्ष अदालत द्वारा किया गया बताया और लोगों के मन में गलत धारणा पैदा करने की कोशिश की। ◆◆◆

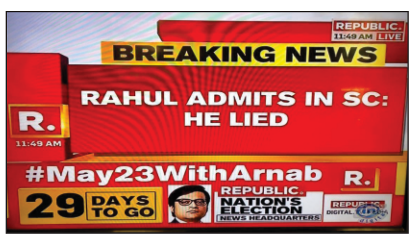

शुभकामनाओं सहित

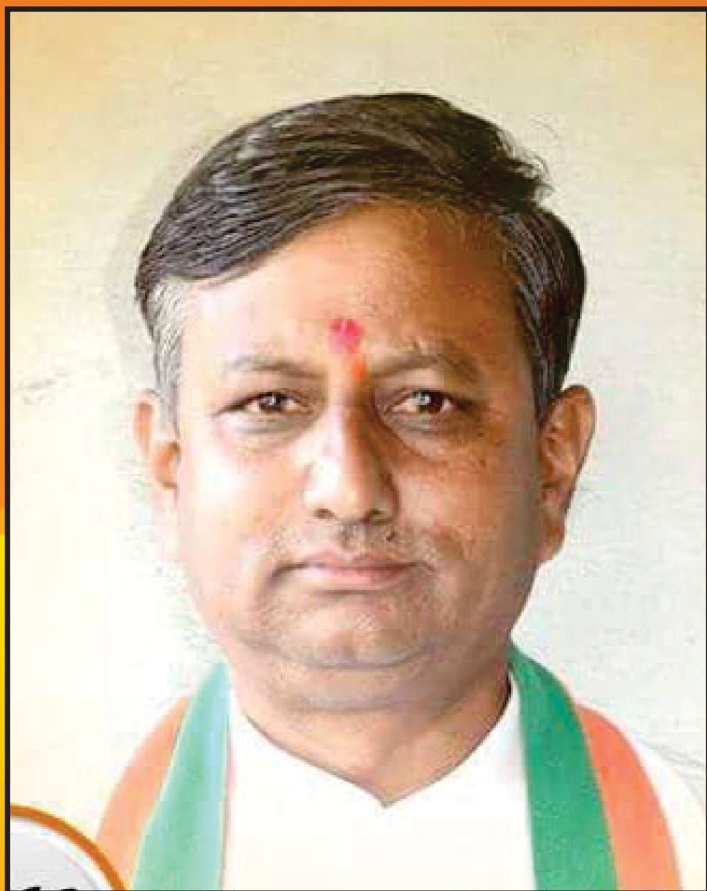

राजेन्द्र गर्ग

विधायक घुमारवीं, बिलासपुर

अद्भुत है सांचा विद्या व पाबूची लिपि

... गौपाल दत्त

पाबूची लिपी की 350 पांडूलिपियों का अध्ययन कर आज भी याचक को फलादेश बताया जाता है। पाबूची विद्या ज्योतिष के माध्यम से किसी जातक के भविष्य निर्माण व कुंडली निर्माण संबंधी फलादेश व नक्षत्रों का अध्ययन करने की विद्या है। इनमें जन्म के समय स्थान व अंक्षाश निकाले जाते हैं। उसके बाद विंशोत्तरी महादशा व योगिनी महादशा निकाली जाती है। इसके बाद नवांश चक्र का निर्माण होता है। इन सब का निर्माण करने के बाद एक किताब या जिसे सांचा कहते हैं। उसके द्वारा फलादेश बताया जाता है। यह शेर के दांत अथवा बारहसिंगा के सींग से निर्मित होता है यह चार कोनों वाला होता है। चारों कोनों पर अलग-अलग संख्याओं में अंक खुदे होते हैं। इस किताब या सांचा को मृगछाल के उपर रखा जाता है। जिससे फलादेश की गणना की जाती है। प्रश्न पूछने के लिए अलग ढंग प्रयोग किया जाता है। लकड़ी की बेदी पर मंदिर की मिटी डाली जाती है। उस पर सांचे का आकार कुरेदते हैं। जिससे धरेवट विधि से ज्योतिष गणना की जाती है। इससे देव-दोष, पितृ-दोष, तांत्रिक गतिविधियों के बारे में पता लगाकर उनका सात्विक विधि से उपाय बताए जाते हैं।

सिरमौर जिला के शिलाई विकास खंड की शखोली पंचायत के खडकांह गांव में पाबूच ब्राह्मणों के 60 परिवार आज भी सांचा विद्या व पाबूची लिपी की 350 पांडूलिपियों का अध्ययन कर लोगों को फलादेश बताते हैं। इस गांव के ब्राह्मणों की खासियत यह है कि यहां का कोई भी व्यक्ति मांसाहारी भोजन का सेवन नहीं करता। शराब पीना भी मना है, गांव में नशे की सभी वस्तुएं निषेध हैं। बाहर से भी काई व्यक्ति गांव में इन असाध्य वस्तुओं को लेकर प्रवेश नहीं कर सकता। यहां तक की सिगरेट व तंबाकू का प्रयोग करना भी मना है। इस गांव के सभी ब्राह्मण पंथ ऋषि की संतान हैं। ये विष्णु के उपासक हैं। ग्राम देवता के रूप में लोग महासू देवता की पूजा करते हैं। खडक्‍ांह गांव में संवत् 1157 में राजस्थान के जैसलमेर से यह पाबूच पंडित सिरमौर के महाराजा ढाकेंद्र प्रकाश के जन्म पर यह लोग रानी के साथ आए थे। सिरमौर रियासत के राजा ने इन ब्राहमणों को दूर-दराज के क्षेत्र खडक्‍ांह में बसाया। इसका कारण यह था कि यह लोग शांति प्रिय व एकांत में रहकर ज्योतिष विद्या का अध्ययन व फलादेश संहिता का निर्माण पहाड़ी भाषा में करना चाहते थे। इसके लिए राजा ने रियासत के कुछ काबिल विद्वानों को उनके साथ भेजा। पीढ़ी दर पीढ़ी यह ज्योतिष के ग्रंथों की रचना करते गए। इन्होंने पाबूची शैली में लगभग 400 ज्योतिष व प्रश्नावली संबंधी ग्रंथ तैयार किए। जिनमें से आज 350 के करीब पांडूलिपियां इन लोगों के पास सुरक्षित हैं। इस विद्या से फलादेश जानने, जन्म पत्री निर्माण, तांत्रिक गतिविधियों व अन्य क्रियाकलापों को जानने के लिए पूरे उत्तर भारत से लोग इन ब्राह्मणों के पास अपना भविष्य फल जानने के लिए आते हैं। इनमें उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली व मध्यप्रदेश के लोग अधिक संख्या में आते हैं। यहां तक की कई बार पुलिस भी चोरी की बड़ी-बड़ी घटनाओं को सुलझाने के लिए पाबूची विद्या का सहारा लेती है। इसके अलावा बड़े-बड़े व्यापारी व उद्योगपति भी पाबूच विद्या के माध्यम से अपना भविष्य पूछने इनकी शरण में आते हैं। इनकी खासियत यह है कि चाहे कोई कितना ही बड़ा धनवान हो। या गरीब सभी को मात्र सवा पांच रूपए सांचें में रखने होते हैं। यही मात्र इन लोगों की दक्षिणा होती है अपनी श्रद्धा से कोई कुछ दे जाए वह अलग बात है। खडक्‍ांह के निवासी विष्णु के उपासक होने के चलते शुद्ध शाकाहारी हैं। गांव का कोई भी व्यक्ति बाहर भोजन नहीं करता। यहां तक की इस गांव के लोग अगर कहीं बाहर जाते है तो वह स्वयं अपना भोजन बनाते हैं।

किसी के हाथ का बना हुआ भोजन नहीं खाते। किसी होटल या रेस्तरां में खाना खाना भी निषेध है। वीरवार के दिन सभी लोग मीठा भोजन ही करते हैं। इस दिन नमक खाना निषेध है। इनकी शादी-विवाह में भी मांसाहारी भोजन नहीं बनता। राजगढ़ में रह रहे मोहन लाल पाबूच का कहना है कि उनकी पाबूची विद्या को संरक्षित करने के लिए सरकार गंभीर प्रयास नहीं कर रही है। हालांकि भाषा एवं संस्कृति विभाग ने कई बार कार्यशाला लगाकर इसकी जानकारी देने की कोशिश की है। मगर सीमित वित्तीय साधन होने के कारण इस विद्या को प्रोत्साहन नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने बताया कि यदि इस विद्या को संरक्षित किया जाए तो ज्योतिष व संस्कृत के विद्वानों के लिए यह बहुत सहायक सिद्ध होगा।♦♦♦

मातृवन्दना के 'राष्ट्रभाव जागरण' विशेषांक का विमोचन

मातृवन्दना संस्थान हिमाचल प्रदेश द्वारा मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष के समापन अवसर पर 'राष्ट्रभाव जागरण' विशेषांक एवं नववर्ष कैलेण्डर विमोचन कार्यक्रम का आयोजन 6 अप्रैल को शिमला के गेयटी थियेटर में किया गया। प्रो० मकरंद परांजपे, निदेशक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे, कार्यक्रम की अध्यक्षता बलदेव भाई शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार, पाञ्चजन्य के पूर्व संपादक एवं पूर्व चेयरमेन एन.बी.टी., दिल्ली ने की। वर्तमान में बलदेव भाई केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।

क्षेत्रीय प्रचार प्रमुख अनिल कुमार कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रहे। उन्होंने मातृवन्दना संस्थान और संपादक मण्डल को साधुवाद किया उन्होंने कहा कि एक सुंदर विषय पर विशेषांक का सृजन किया है। कहा कि पत्रिका सामाजिक जीवन का आईना होती हैं। मुख्यातिथि प्रो0 मकरंद परांजपे ने इस अवसर पर कहा कि मातृवन्दना जागरण पत्रिका लोगों की चेतना को जगाने का काम कर रही है। जागरण पत्रिकाओं के संचालन में अन्य प्रकाशनों की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना पड़ता है। क्योंकि भारत के जनमानस ने जिस इतिहास को पढ़ा है, जागरण पत्रिका कई बार उससे अलग विचार रखती है। अध्यक्ष बलदेव भाई शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि पत्रकारिता की बारीकियों और राष्ट्रभाव से प्रेरित संदर्भों को अपने स्तंम्भों में शामिल करने की बात कही। उन्होंने कहा कि मीडिया का कार्य सिर्फ समाचार देना नहीं बल्कि लोकशिक्षण है। उन्होंने कहा कि जागरण पत्रिकाएं किसी भी समाज के लिए जागरूकता के साथ-साथ दिशा प्रदान करने का काम भी करती हैं। उन्होंने पत्रिका सफल संपादन और इसके कलेवर में सुधार के लिए संस्थान को साधुवाद भी दिया।

इस अवसर पर मातृवन्दना पत्रिका के संपादन कार्य में सहयोग करने वाले लेखकों व पाठकों को भी सम्मानित किया गया। संपादन कार्य में सहयोग के लिए टेकचन्द, सुभाष सूद, परितोष बेलगो, गुलाब सिंह गुलेरिया सम्मानित किया गया। वहीं मातृवंदना पत्रिका से जुड़े लेखकों चेतन कौशल नूरपुरी, डा0 उमेश पाठक, डा0 चमनलाल बंगा, डॉ0 जयप्रकाश, राकेश सेन तथा सुरेन्द्र कुमार को पुरस्कृत किया गया। वहीं कविता लेखन में श्री चिरानंद शास्त्री व रामऋषि भारद्वाज तथा अधिकतम सदस्यता करने के लिए जमनादास अग्निहोत्री, हरिदास जम्बाल, प्रदीप बाली, सुश्री सुरेखा व नवनीत सूद को भी सम्मानित किया गया। संपादक के नाम बेहतरीन पत्र लिखने वालों में भीम सिंह परदेसी, जगदीश जमथली व जोगिन्द्र सिंह को सम्मानित किया गया। पत्रिका वितरण में पोस्टमेन की अहम भूमिका के दृष्टिगत 3 पोस्टमैन को भी सम्मान दिया गया। यह सम्मान श्री राजेन्द्र शर्मा, धानीराम तथा ओमप्रकाश को दिया गया।

इस अवसर पर संस्कार भारती के कलाकार द्वारा नववर्ष पर गीत प्रस्तुत किया गया। मातृवन्दना संस्थान के अधयक्ष अजय सूद ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। ◆◆◆

अमर बलिदानी सुखदेव

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा देने वाली झाँसी की वीर रानी लक्ष्मीबाई को अपना आराध्य मानने वाले अमर बलिदानी सुखदेव का जन्म ग्राम नौघरा, जिला लुधियाना, पंजाब में 15 मई 1907 को हुआ था। उनकी शिक्षा लायलपुर और फिर लाहौर में हुई। लाहौर में उनका सम्पर्क भगतसिंह, राजगुरू, भगवतीचरण बोहरा आदि क्रान्तिकारियों से हुआ। इस सम्पर्क ने उनके मन में क्रान्ति की वह ज्योति जलायी, जिससे वे बलिदानी बाना पहनकर फांसी के तख्ते तक जा पहुंचे।

9 सितम्बर 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में एक गुप्त बैठक हुई। इसमें पूरे देश में क्रान्तिकारी गतिविधियों के विस्तार के लिए एक समिति का गठन किया गया। इस समिति की योजनानुसार सुखदेव को पंजाब में क्रान्तिकारी कार्यों का नेतृत्व करने को कहा गया। सुखदेव ने इसके बाद पंजाब के दूरदराज के क्षेत्रों में सम्पर्क करना प्रारम्भ कर दिया।। 1928 में साइमन कमीशन भारत आया। भारत के सभी क्षेत्रों में उसका व्यापक विरोध हुआ। 30 अक्तूबर, को लाहौर में उसके आगमन पर एक विशाल विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसका नेतृत्व पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने किया। प्रदर्शन को मिले व्यापक जनसमर्थन से पुलिस कप्तान स्कॉट बौखला गया। उसने प्रदर्शनकारियों पर घोड़े चढ़ा दिये और स्वयं लाठी लेकर वयोवृद्ध लाला जी पर टूट पड़ा।

इससे लाला लाजपतराय को गम्भीर चोटें आयीं। कुछ समय बाद उनका देहान्त हो गया। उनकी चिता की भस्म माथे पर लगाकर क्रान्तिकारियों ने शपथ ली कि इसका बदला लिया जाएगा। .... दिसम्बर को स्कॉट के धोखे में साण्डर्स को पुलिस कार्यालय के बाहर ही गोली मार दी गयी। इसमें चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और राजगुरू के साथ सुखदेव भी शामिल थे। सारे लाहौर नगर में शोर मच गया; पर कोई क्रान्तिकारी हाथ नहीं आया। सब एक-एक कर लाहौर से बाहर निकल गये।

> 31 अक्तूबर 1930 को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी की सजा घोषित की गयी। इनके अन्य साथियों शिव वर्मा, डा0 गयाप्रसाद, जयदेव कपूर, किशोरीलाल तथा तीन अन्य को आजीवन कारावास की सजा हुई। जेल में भी क्रान्तिकारियों को बहुत परेशान किया जाता था।

आगे चलकर और भी कई गतिविधियों में सुखदेव ने भाग लिया; पर कुछ समय बाद वे पकड़े गये। तब तक दिल्ली के संसद भवन में बम फेंककर भगतसिंह व बटुकेश्वर दत ने स्वयं को गिरफ्तार करा दिया था। धीरे-धीरे साण्डर्स हत्याकाण्ड से जुड़े प्राय: सभी क्रान्तिकारी पकड़ लिये गये। 31 अक्तूबर 1930 को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी की सजा घोषित की गयी। इनके अन्य साथियों शिव वर्मा, डा0 गयाप्रसाद, जयदेव कपूर, किशोरीलाल तथा तीन अन्य को आजीवन कारावास की सजा हुई। जेल में भी क्रान्तिकारियों को बहुत परेशान किया जाता था। मारपीट और खाने में मिट्टी मिला देना सामान्य बात थी। इसके विरूद्ध सुखदेव ने लम्बा अनशन किया। इन तीनों को 23 मार्च 1931 की प्रात: फांसी देने का निर्णय हुआ था; पर पूरे देश में इस निर्णय के विरूद्ध प्रदर्शन हो रहे थे।

यह देखकर प्रशासन डर गया और उसने षड्यन्त्र पूर्वक 23 मार्च की शाम पौने सात बजे लाहौर के केन्द्रीय कारागार में गुपचुप तरीके से तीनों को फांसी दे दी। इतना ही नहीं, उनकी लाशों को भी घर वालों को न सौंपकर रावी नदी के तट पर मिट्टी का तेल डालकर जला दिया। पर इन तीन क्रान्तिवीरों के बलिदान से भारत के जनमानस में जो चेतना जागी, उसने अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी।

साभार: हर दिन पावन ◆◆◆

श्याम स्याह छोड़ गया ब्लैक ईस्टर

... सुरेन्द्र कुमार

ईस्टर संडे को प्रभु ईसा मसीह पुनर्जीवित हुए थे। ईसाई धर्म के अनुयायी इस दिवस को ईस्टर त्योहार के रूप में मनाते हैं। इस दिन लोग अमन-चैन की दुआ के लिए गिरिजाघरों में एकत्रित होते हैं तथा सामूहिक प्रार्थना करते हैं। लेकिन गत रविवार श्रीलंका के अलग-अलग गिरिजाघरों में मानवता के दुश्मनों ने जो तांडव दिखाया, उसके प्रभाव से पूरा विश्व सिहर गया। लंका की आवाम ने इस ईस्टर को दहशतगर्दी का जो वीभत्स दृश्य देखा उससे पूरी दुनिया दहल उठी। मानवीय लहू के प्यासे धार्मिक कट्टरपंथी ने जिस तरह से श्रीलंका की विभिन्न जगहों पर अपनी हत्यारी बिसात बिछाई थी कि देखकर हर कोई बेसुध सा हो गया। बीते रविवार श्रीलंका में जब लोग ईस्टर के मौके पर चर्च में प्रार्थना करने को जमा हुए थे। तभी कट्टरपंथियों की एक घात ने उन्हें सदा के लिए प्रभु ईसा मसीह के पास पहुँचा दिया। सभा ने जैसे ही प्रार्थना शुरू की तो धर्म के दुश्मनों ने एक बटन दबाकर सभागार में मौजूदा भीड़ को इस प्रकार तितर-बितर किया मानो वे जीवित प्राणी नहीं बल्कि कोई निर्जीव वस्तु हो। पलभर में कोलंबो के संेट एंथनी चर्च, नेगोंबो की सेंट सेवेस्टियन चर्च, बट्टिकलोआ चर्च, पांच सितारा होटल शंगरीला, द सिनमॉन ग्रांड, द किंग्सवरी सहित कुल आठ स्थलों के लोग जमींदोज हो गए। जबकि एक जीवित बम को सोमवार दोपहर बाद निष्क्रिय करने में पुलिस ने सफलता हासिल की। धमाके इतने भयानक थे कि मृतकों के चिथड़े हर ओर बिखर गए। जो अनुयायी ईसा मसीह की दिव्य आत्मा से अमन की अर्ज कर रहे थे वे वहां सदा के लिए मौन हो गए। घटना स्थल पर पलभर में लाल रक्त की धारा प्रवाहित होने लगी। क्षत विक्षत शवों के मध्य अपनों को तलाशते, चीखते परिजनों ने ऐसा हृदय विदारक मंजर शायद ही कभी देखा हो। मानवता के दुश्मनों की इस कायराना करतूत ने श्रीलंका के अस्पतालों को शवों से भर दिया। ब्लास्ट का असर इतना दर्दनाक था कि देश में एम्बुलैंस, डॉक्टर, स्टैचर, मरहम पट्टी की कमी हो गई। फिदाईन हमलों में लगभग 250 अभागों को बेमौत काल के जबड़े में समाना पड़ा। जबकि 450 से अधिक लोगों को यह घटना घायल कर गई अब प्रश्न यह उठता है कि आखिरकार कब तक दुनिया कट्टरपंथी एवं नासूर आतंकवाद के कातिलाना सूर को बर्दाश्त करती रहेगी। आज दुनिया के अनेकों देश दानवीय दुस्साहस को झेलते झेलते इतने उब चुके हैं कि उन्हें अपना भविष्य अंधकारमय ही प्रतीत हो रहा है। आज ईरान, इराक, पाकिस्तान, सीरिया ही नहीं अमेरिका, कोरिया, भारत, श्रीलंका सहित अनेकों देश भी बम ब्लास्ट के धमाकों से सिहरते जा रहे हैं। लंका में हुए सिलसिलेवार हमलों से क्षति केवल एक देश को ही नही हुई। इसके दुष्प्रभाव का असर संपूर्ण विश्व में हुआ है। विकृत्त मानसिकता से ग्रसित दोषियों का प्रयास केवल श्रीलंका को कुचलने का ही नहीं था। उनका लक्ष्य संपूर्ण मानव जाति को क्षति पहुँचाना है। परंतु यह हमारे ब्रह्मांड की जुगाड़ु व्यवस्था की एक कड़वी सच्चाई है कि यहाँ दहशतगर्दियों की करतूत पर भी कई देश राजनीति करते हैं। वे आतंकवाद और धार्मिक कट्टरता पर भी मित्र राष्ट्र को संरक्षण प्रदान करते हैं। आज ऐसी घिनौनी हरकतों को नेस्तनाबूत करने के लिए समस्त विश्व को एक स्वर में आवाज बुलंद करने का समय आ गया है। दुनिया को किसी भी कीमत पर गुनहगारों को नहीं बख्शना होगा। हम देखते हैं कि दुनिया के कई देश आज भी पीड़ा की इस घड़ी में अपना नफा नुकसान तोलने पर तुले हैं। ऐसा लगता है मानो उन्हें मानवता के कल्याण से कोई सरोकार ही नहीं है। आज विश्व के कई देश आतंक के पनाहगार बने हुए हैं तथा समय-समय पर उन्हें विश्व के प्रमुख मुल्कों का संरक्षण प्राप्त होता रहता है। कभी चीन कोरिया के साथ खड़ा रहता है तो कभी पाकिस्तान के साथ। इसी तरह अमेरिका भी आतंकवाद के खिलाफ अपनी दोगली नीति का परिचय देता रहता है। जब तक दुनिया के बड़े- बड़े देश आतंकवाद के प्रति सख्त रुख अख्तियार नही करेंगे तब तक नरसंहार के समर्थकों का नंगा नाच निर्दोष लोगों को यूँ ही सहजता से अपना शिकार बनाता रहेगा तथा लोग बेमौत काल का ग्रास बनते रहेंगे। मानवता के शत्रुओं के खात्मे के लिए ढुलमुल रवैये की नहीं बल्कि कड़ी कार्रवाई की अपेक्षा है। अतः वक्त आ गया है कि दुनिया के प्रमुख देश जिसमें अमेरिका, चीन, रूस, फ्रांस, जर्मनी इत्यादि शामिल हैं को आतंकवाद के विरूद्ध एक स्वर में आवाज बुलंद करनी होगी। यदि शक्तिशाली देश इस दानवीय कृत्य के खिलाफ संयुक्त कार्रवाई प्रभाव में लाते हैं तो निश्चित तौर पर दुनिया इस भयानक विनाश के मुहाने पर पहुंचने के प्रभाव से मुक्त हो जाएगी।

◆◆◆

किशतवाड़ के शहीद चंद्रकांत को श्रद्धांजलि

कहां

गत नवंबर में किशतवाड़ में भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष अनिल परिहार व उनके भाई की आतंकवादियों ने गोलियां दागकर निर्ममता पूव हत्या कर दी थी। अभी उस हत्याकांड की जांच चल ही रही है और स्थानीय जांच एजेन्सियां अभी तक किसी भी अपराधी को पकड़ नहीं पाई हैं, ठीक इसी बीच किशतवाड़ में संघ से जुड़े एक कद्दावर स्थानीय कार्यकर्ता सरकार में मेडीकल असिस्टेंट के रूप में सेवा दे रहे चन्द्रकान्त तथा उनके अंगरक्षक राजेन्द्र कुमार की आतंकवादियों द्वारा अंधाधुंध गोलियों से निर्मम हत्या कर दी गई। उल्लेखनीय है कि उस समय चन्द्रकांत शर्मा चिकित्सालय में सेवा दे रहे थे। चन्द्रकान्त निरन्तर 33 वर्षों से समाज कार्य में सक्रिय थे। समाज को जोड़ने, जागरूक करने तथा युवाओं को संघर्षों से जूझने की प्रेरणा वह देते रहे। यह उन्हीं का प्रयास था कि स्थानीय समाज ने अलगाववादी शक्तियों का इस दुर्गम क्षेत्र में डटकर मुकाबला किया। उनका बलिदान हमेशा कार्यकर्ताओं एवं समाज को प्रेरणा देता रहेगा। संपूर्ण जम्मू-कश्मीर एवं क्षेत्र की जनता पाक परस्त आतंकवादियों के इस अमानवीय कृत्य की घोर निन्दा करता है। राष्ट्र भक्त समाज नागरिकों तथा सुरक्षा बलों के साथ है तथा सुरक्षाबल इन अलगाववादी शक्तियों का पुरजोर मुक़ाबला करें, ताकि प्रदेश के नागरिक शांति के साथ जीवन यापन कर सकें। वह एक कुशल संगठनकर्ता, कार्यकर्ताओं की संभाल तथा नित्य चिन्ता करने वाले व समाज के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे। उन्होंने अनेक बंधुओं को निरन्तर समाज कार्य में लगे रहने की प्रेरणा दी। डोडा, किशतवाड़ में आतंकवाद के दौर में भी सेना का सतत् सहयोग करते हुए वहाँ

आतंकवाद से जूझते हुए, अपनी व अपने परिवार की चिन्ता न करते हुए स्थानीय नागरिकों का मनोबल बढ़ाया। इस कारण आम समाज में भी उस दौर में अपने स्थान पर जमकर डटे रहने की हिम्मत बनी रही। ◆◆◆

समाजसेवी व्यवसायी का अवसान

शिमला शहर के प्रसिद्ध व्यवसायी व समाजसेवी विजय अग्रवाल का अस्वस्थता के चलते देहांत हो गया। वे 79 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके थे। अपने माता-पिता के आठ संतानों (चार भाई व चार बहिनों) में वे दूसरे स्थान पर थे। उनके परिवार में पत्नी व एक बेटा है। स्व. विजय जी बाल्यकाल से ही अपने पिताजी के साथ पैतृक व्यवसाय में लग गए।

अपने व्यवसायिक जीवन से समय निकालकर आप क्षेत्र की कई संस्थाओं से जुड़े हुए थे। अग्रवाल सभा, सेवा भारती, भारत विकास परिषद आदि संगठनों के द्वारा चलाए गए सेवा प्रकल्पों में नियमित रूप से सेवाएं देते रहे। अग्रवाल सभा शिमला के कई वर्षों तक अध्यक्ष रहे। सभा के कार्यकलापों के संचालन हेतु सदस्यों व समाज के अन्य

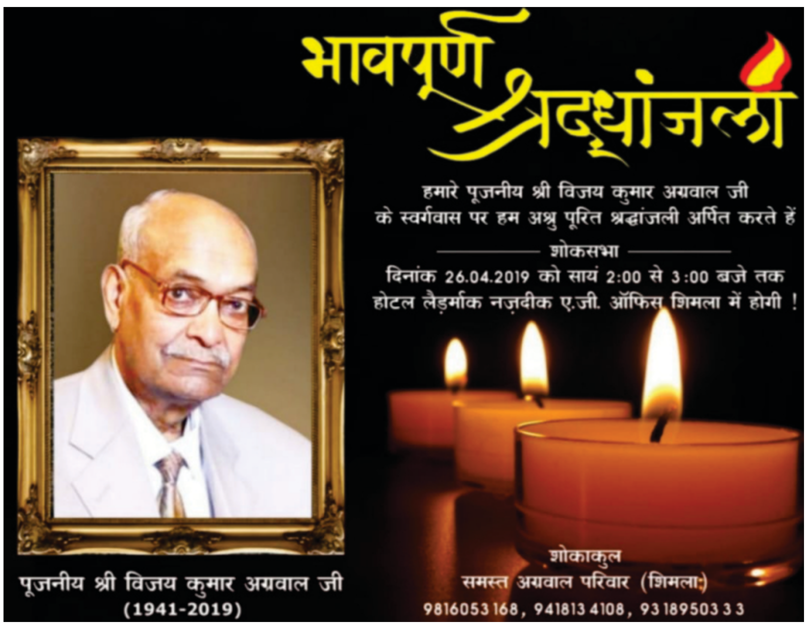

महानुभावों के सहयोग से लौंगवुड में उन्होंने एक धर्मशाला का निर्माण भी करवाया। आज इस धर्मशाला में समय-समय पर स्थानीय सामाजिक गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। सेवा भारती के सेवा केन्द्रों की सहायता हेतु वे सदैव तत्पर रहते थे। मृत्यु पर्यन्त वे सभा व समाज के कार्यक्रमों में सहभागी रहे। उनके असामयिक निधन से समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है। ◆◆◆

Doon Valley Public School

A Prestigious CBSE Co-Educational Senior Secondary Day School

The School with a Vision that :

- ☞ Provides all facilities for development of Holistic Personality
- ☞ Facility student to realize their optimum potential
- ☞ Equips student to meet the challenges of life
- ☞ Builds strong value system alongwith life-skills
- ☞ Helps students to excel in academics, sports and co-scholastic domains
- ☞ Prepares student for the journey of life

Peersthan, Nalagarh, Distt. Solan, Himachal Pradesh 174 101

Ph. No. 01795-654088/221388 | E-mail : dvps@dvpsnalagarh.com | Visit us : www.dvpsnalagarh.com

न्यायपालिका की नकारात्मक स्वतंत्रता

... दुष्यंत दवे

यह कहते हुए कि, 'अदालत कृपया मीडिया से ऐसी सामग्री को हटाने का अनुरोध करती है जो अवांछनीय है।' निश्चित रूप से भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पास राष्ट्रपति के संदर्भ के अलावा कोई सलाहकार क्षेत्राधिकार नही है। वास्तव में इस समय फिर से, न्यायाधीशों, वकीलों और वादियों को यह कहते हुए सुना जाता है कि मामलों को खारिज किये जाने पर क्या करना है? यह सलाह देने के लिए अनुरोध किया जाता है। 'यह हमारी सलाह का कोई हिस्सा नहीं है।' इस तरह के आदेश ने भारत के सर्वोच्च न्यायालय की प्रतिष्ठा को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाया है। न्यायालय की प्रतिष्ठा के बारे में चिंतित न्यायाधीशों को इस फिसलन की कवायद करने से बचना और स्वयं को बचाना चाहिये था।

माई लॉर्ड! आपने हर ज्ञात न्यायिक आदर्श और व्यवहार के खिलाफ काम किया है। आपने अपने कानून के खिलाफ काम किया है, जिसे आपने दशकों से शानदार ढंग से और सही तरीके से घोषित किया है। कृपया याद रखें, घोषित कानून आपके आधिपत्य को भी बांधता है।

सरकार का हाथ।

घटनाओं का पूरा सेट स्वतंत्र मीडिया पर हावी होना चाहता है और एक ऐसे मामले पर रिपोर्टिंग को हतोत्साहित करता है, जिसे मैं लोकतंत्र के अस्तित्व को अक्षुण रखने के लिए कहीं अधिक महत्वपूर्ण मानता हूँ। जब सरकार को लेकर अदालत के सामने सबसे बड़ी मुकदमेबाजी होती है राफेल जैसे कुछ मामलों में और सीबीआई निदेशक के मामले के अलावा लगभग सभी विपक्षी नेताओं को शामिल करने के मामले में निश्चित रूप से आपत्तिजनक है और अदालत की स्वतंत्रता को खुद से

नकार देती है। वर्तमान समय में, सत्ता में सरकार और पार्टी जो कुछ भी स्वतंत्र मीडिया पर छोड़ दिया है उसे थूक देना चाहेगी। तो क्या अदालत को खुद को एक कानून अधिकारी के उदाहरण पर संरक्षित करने की अनुमति देने का अधिकार था? मुझे ऐसा नहीं लगता। इससे भी अधिक दुख की बात यह है कि भारत के मुख्य न्यायाधीश ने 12 जनवरी, 2018 को स्वयं न्यायमूर्ति गोगोई सहित भारत के सर्वोच्च न्यायालय के चार वरिष्ठ न्यायाधीशों द्वारा आपत्ति जताई गई थी और वह सबसे चुनिंदा तरीके से एक पीठ का गठन कर रही है और वह भी शनिवार की सुबह, छुटियों के दौरान। भारत के पिछले मुख्य न्यायाधीशों द्वारा इस सम्बन्ध में बार-बार गलत कदम उठाये गये हैं, और यह भी उनके 'कारण' में से एक है। आप इसे पसंद करते हैं या नही? माई लॉर्ड्? आपने इस तरह के कृत्यों से न्यायपालिका की स्वतंत्रता को गंभीरता से मिटा दिया है। इसे करने के लिये बाहरी लोगों की जरूरत नहीं है, ऐसा लगता है।

मुझे एक बात स्पष्ट करनी चाहिये है। नागरिकों, जिनमें वकील शामिल हैं, जो असहायों की रक्षा के लिए खड़े हैं, संस्था का सबसे अधिक सम्मान करते हैं। वे इसकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के लिए कुछ नहीं करते हैं। वास्तव में, वे इसे अपने साहस से बनाने में मदद करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप या जिसके आधार पर अदालतों द्वारा साहस पूर्ण निर्णय लिया जाता है।

न्यायपालिका में उत्कृष्ट न्यायाधीश शामिल हैं और समय-समय पर विषम न्यायिक आचरण के बावजूद इसकी प्रतिष्ठा बरकरार है। इसे बढ़ाने के लिये स्वयंसेवी व्यक्तियों या सरकार की आवश्यकता नहीं है। लेकिन फिर उन अच्छे न्यायाधीशों को यह भी पता होना चाहिये कि संस्थान सभी के अंतर्गत आता है और उनमें से प्रत्येक न्यायाधीश और वकील को समान रूप से, इसे भीतर से होने वाले हमलों से बचाने के लिए काम करना चाहिये। यदि वे विफल होते हैं, तो संस्थान विफल हो जायेगा, और यह विफल हो रहा है।

आप पर लोगों का भरोसा।

याद कीजिए कि, के. वीरस्वामी मामले में कोर्ट ने क्या कहा था? 'न्यायपालिका के पास पर्स या तलवार की कोई शक्ति नहीं है। यह केवल जनता के विश्वास से बचता है और समाज की स्थिरता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि जनता का विश्वास हिल न जाय।' अदालत ने इस तरह की असाधारण सुनवाई को और अधिक असाधारण तरीके से आयोजित करने के लिए प्रेरित किया। निश्चित रूप से, न्यायालय का गठन संविधान के रक्षकों द्वारा स्वयं की सुरक्षा के लिए नही किया गया है। भारत के मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ लगे आरोपों में जाना मेरा उद्देश्य नहीं है, मैं पूरी ईमानदारी से स्वतंत्र जांच पर गलत साबित होने की उम्मीद करता हूं। लेकिन यह निश्चित रूप से न्यायपालिका को छूने वाली बात नहीं है, इसकी स्वतंत्रता या प्रतिष्ठा बहुत कम है। इसमें कोई संदेह नही है कि शनिवार की कार्यवाही ने जनता का विश्वास हिला दिया है, और वह भी बहुत बुरी तरह से।

अकेला पार्थ

एक अकेला पार्थ खड़ा है
भारत वर्ष बचाने को।
सभी विपक्षी साथ खड़े हैं
केवल उसे हराने को।।
भ्रष्ट दुशासन सूर्पनखा ने
माया जाल बिछाया है।
भ्रष्टाचारी जितने कुनबे
सबने हाथ मिलाया है।।
समर भयंकर होने वाला
आज दिखाई देता है।
राष्ट्र धर्म का क्रंदन चारों
ओर सुनाई देता है।।
फेंक रहे हैं सारे पांसे
जनता को भरमाने को।
सभी विपक्षी साथ खड़े हैं
केवल उसे हराने को।।
चीन और नापाक चाहते
भारत में अंधकार बढ़े।
हो कमजोर वहां की सत्ता
अपना फिर अधिकार बढ़े।।
आतंकवादी संगठनों का
दुर्योधन को साथ मिला।
भारत के जितने बैरी हैं
सबका उसको हाथ मिला।।
सारे जयचंद ताक में बैठे
केवल उसे मिटाने को।
सभी विपक्षी साथ खड़े हैं
केवल उसे हराने को।
भोर का सूरज निकल चुका है अंधकार
घबराया है।।
कान्हा ने अपनी लीला में
सबको आज फंसाया है।
कौरव की सेना हारेगी
जनता साथ निभाएगी।
अर्जुन की सेना बनकर के
नइया पार लगायेगी।
ये महाभारत फिर होगा
हाहाकार मचाने को।
सभी विपक्षी साथ खड़े हैं
केवल उसे हराने को।।
'जय हिंद -वंदे मातरम्

आघात

कुछ के दिल में,
तो कुछ के दिमाग में भी हूँ।
कुछ की नजरों में,
तो कुछ के नजारों में भी हूँ।
कुछ के स्नेह में,
तो कुछ के विशेष-प्यारों में भी हूँ।
कुछ को सितारों में,
तो कुछ के लिए हजारों में भी हूँ।
कुछ की हवा में,
तो कुछ की दवा में भी हूँ।
कुछ के लिए तलवार हूँ,
तो कुछ के लिए पतवार भी हूँ।
बाहर से कैसे समझ लेते हो जनाब
अच्छाई के अगर साथ हूँ,
तो बुराई के लिए अघात भी हूँ।।
हितेन्द्र शर्मा, कुमारसैन

इस वर्ष मातृवन्दना संस्थान द्वारा, मातृवन्दना पत्रिका में स्तरीय लेख लिखने वाले लेखकों को पुरस्कृत करने की योजना बनी है, जिसमें 500 रुपए तक की पुस्तकें या नकद राशि प्रदान की जा सकेगी। सम्बन्धित लेखकों को पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा।

मातृवन्दना पत्रिका में अप्रैल 2019 से मार्च 2020 के बीच प्रत्येक अंक में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ संपादक के नाम पत्र लेखकों को सम्मानित करने की योजना है। अतः इच्छुक पाठक अपनी प्रतिक्रिया अपने पूर्ण पते के साथ संपादक कार्यालय, मातृवन्दना संस्थान, डॉ0 हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 को प्रति माह भेजते रहें। इस प्रकार भेजे हुए पत्रों को आगामी अंकों में क्रमशः प्रकाशित किया जाएगा

मतदान है जरूरी

मतदान करना हम सब के लिए जरूरी
आने न दें इस में कोई मजबूरी
जनता की बुलन्द आवाज़ का लोकतन्त्र
के अवार्ड लिवाज़ का ।
जन मानस की अटूट ताकत का
देश भक्ति की दृढ़ शक्ति का
लोकतन्त्र ही है इक सहारा
लोकतन्त्र है लोंगों का प्यारा
वंशवाद को नहीं बढ़ने दें
पब्लिक को न आपस में लड़ने दें
मताधिकार इक मजबूत कड़ी है
जनता सत्ता के जो बीच खड़ी है
मतदान जनता का मुख्य हथियार है
उसकी शक्ति का मतदान ही सार है।
आओ मतदान का महत्व जान लें
लोकतंत्र को बचाने में ध्यान दें
मतदान लोकतन्त्र की अदभुत धुरी
लोकतन्त्र हमें बचाना है जरुरी
सोच समझ कर करें मतदान
भारतवर्ष तभी बनेगा महान ।।
सुषमा देवी
भरमाड़, कांगड़ा

भारत भक्ति का आह्वान्, देशहित में हो शत् प्रतिशत् मतदान

19 मई 2019 को लोकसभा का चुनाव भारत के उज्ज्वल भविष्य हेतु चुनाव है।

अतः पहले सोचें, समझें और करें पहचान- फिर करें मतदान

किसे करें मतदान........?

1. देश भक्तों का सम्मान करने वाले विचार को या फिर देश-द्रोही कानून को निरस्त कर देशद्रोहियों का सम्मान करने वालों को।
2. आतंकवादियों को शत्रु देश में घुस कर मारने वालों को या फिर आतंकवाद को आश्रय देने वालों को।
3. आतंकवाद को कुचलने के लिए सेना को खुली छूट देने वालों को या "AFSPA" कानून निरस्त कर सैनिकों के हाथ बांधकर आतंकवादियों के हाथों मरवाने वाले वर्ग को।
4. ईमानदार, परिश्रमी, बेदाग-छवि की सरकार चलाने वालों को या घोटालों पर घोटाले कर देश को लूटने वालों को।
5. देशहित में निर्णय लेकर दुनिया में भारत का मान बढ़ाने वालों को या फिर अपने स्वार्थ के लिए लोक लुभावन प्रलोभन देने वालों को।
6. अपने देश को दुनियां में सर्व-श्रेष्ठ बनाने के लिए अनथक परिश्रम करने वाले विचार को या अपने पापों के डर से इकट्ठे होने वालों को।
7. मातृशक्ति का सम्मान करने वाले विचार को या मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक और हलाला के नरक में धकेलने वालों को।
8. सेना का सम्मान करने वाले विचार को या फिर बार-बार प्रमाण पूछ कर सेना का मनोबल गिराने वालों को।
9. भारतीय संस्कृति का सम्मान एवं संरक्षण करने वाले विचार को या अपनी संस्कृति का अपमान कर विदेशी संस्कृति को बढ़ावा देने वालों को ।
10. आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य एवं विज्ञान के क्षेत्र में भारत को दुनिया में महाशक्ति के रूप में खड़ा करने वाले विचार को या दुनिया के डर से देश को दब्बू बनाने वालों को।
11. समाज को सत्ता स्वार्थ के लिए जाति, धर्म के आधार पर बांटने वालों को या सम्पूर्ण समाज का एक समान विकास करने वाले विचार को ।
12. घुसपैठियों को देश से बाहर खदेड़ने वाले विचार को या वोट की खातिर घुसपैठ को प्रोत्साहन और आश्रय देने वालों को।
13. भारत की एकात्मता के लिए काम करने वालों को या एक देश में दो विधान, दो प्रधान, दो निशान का राग अलापने एवं देश को तोड़ने वालों के समर्थन में उपवास और धरने पर बैठने वालों को ।

आइये ! हम सब मिलकर जाति, पंथ, क्षेत्र आदि की भावना से ऊपर उठकर ईमानदार, सुयोग्य, मेहनती और कर्मठ हाथों में अपने देश का भविष्य सौंपें जो 'भारत माता' की प्रतिष्ठा विश्व पटल पर पुनः स्थापित कर सकें ।

निवेदक

देश मेरा, मैं देश के लिए, मेरा वोट देश के लिए।।

हिमाचल जनकल्याण संस्थान,
शिमला (हि० प्र०)

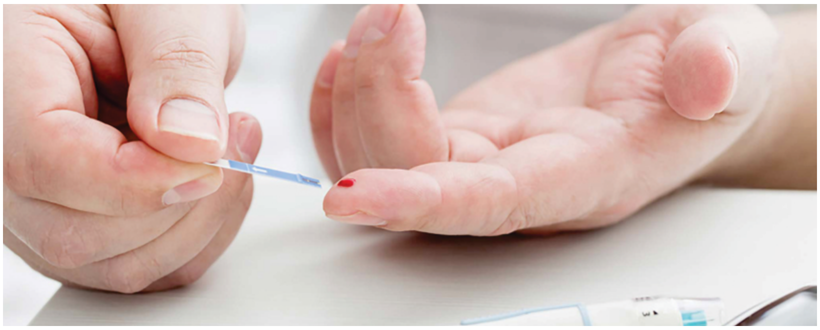

स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं

डायबिटीज शरीर की छोटी नसों को नुकसान पहुंचाती है जिससे किडनी की रक्त साफ करने की क्षमता पर असर पड़ता है। हाई शुगर के लोगों को हाई ब्लड प्रेशर और हाई कोलेस्ट्रॉल की समस्या भी हो सकती है जिससे स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है। अगर डायबिटिज के चलते पाचन तंत्र के नर्व्स को नुकसान पहुंचता है तो यह मितली, कब्ज आदि का कारण बन सकता है। मधुमेह से जंग में किन चीजों का ध्यान रखना चाहिए यह जानना बेहद जरूरी है।

स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं

स्वस्थ जीवन शैली शरीर को मेटाबॉलिक संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। इसके लिए रक्तचाप का स्तर सामान्य और वजन सामान्य होना जरूरी है। ऐसे भोजन का चुनाव करें जिसमें प्रोटीन की मात्रा कम हो। मांसाहार न करें क्योंकि इसमें प्रोटीन की मात्रा काफी अधिक होती है। किडनी सम्बन्धी समस्याओं से बचाव के लिए संतुलित मात्रा में नमक का सेवन करें। बिना चिकित्सकीय सलाह के दवाओं का अत्यधिक इस्तेमाल, खासकर दर्द निवारक दवाएं स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ाने का काम करती हैं।

ब्लड ग्लूकोज पर नियंत्रण

अगर आप मधुमेह ग्रस्त हैं तो सख्ती से अपने ब्लड शुगर पर नियंत्रण रखना चाहिए। ग्लाइकेटेड हीमोग्लोबिन अथवा ग्लाइकोहीमोग्लोबिन 7 % से कम होना चाहिए जो कि सामान्य स्तर है। इसका पता एचबीए1सी जांच से लगाया जाता है। यह जांच पिछले तीन महीने के दौरान आपके औसत ब्लड ग्लूकोज स्तर को दर्शाती है।

रक्तचाप रहे सामान्य

बीमारियों को दूर रखने के लिए रक्तचाप का सामान्य रहना बेहद जरूरी है। ब्लड प्रेशर स्तर को 130/80 एमएमएचजी से नीचे या सम्भव हो तो 130/70 एमएमएचजी पर ही रखने की सलाह दी जाती है। रक्त नलिकाओं पर पड़ने वाला दबाव रक्तचाप कहलाता है। उच्च रक्तचाप के कारण किडनियों को अधिक मेहनत करनी पड़ती है जिससे किडनी फेलियर और हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है।

किडनी का दुश्मन है मधुमेह

किडनी की बीमारियों में बढ़ोत्तरी का एक बड़ा कारण मधुमेह भी है। मधुमेह और मोटापा दोनों ही समस्याओं में एक जैसी मेटाबॉलिक असमानताएं उत्पन्न हो जाती हैं। मोटापा ग्रस्त लोगों को अक्सर मधुमेह, उच्च रक्तचाप, लिपिड सम्बन्धी अनियमितताएं होती हैं। मधुमेह हाइपरफिल्टरेशन का कारण बनता है- अर्थात् किडनी पर अधिक दबाव बनने लगता है जिससे किडनी की बीमारियां विकसित होने की आशंका बढ़ जाती है। साथ ही साथ यह हृदय रोग के खतरे में भी इजाफा कर देता है।

नियमित जांच का नियम

मधुमेह के रोगी में किडनी की समस्या के कोई लक्षण सामने नहीं आते। इसलिए किडनी के स्वास्थ्य की जांच और भी जरूरी हो जाती है। कुछ साधारण जांच जैसे रूटीन यूरिन कल्चर टेस्ट और सीरम क्रिएटिनिन टेस्ट करवाकर किडनी का स्वास्थ्य जांचा जा सकता है। किडनी की समस्या में मूत्रत्याग में समस्या हो सकती है जिससे दबाव के कारण किडनी को नुक्सान हो सकता है। साथ ही मूत्रत्याग सही तरह से न होने पर उसमें मौजूद उच्च शुगर में पनपने वाले बैक्टीरिया के कारण संक्रमण हो सकता है। 40 साल से कम उम्र के व्यक्ति को उच्च रक्तचाप के साथ पैरों में सूजन की समस्या किडनी की बीमारी का शुरूआती लक्षण हो सकती है।

◆◆◆

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU
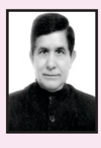
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

... संदीप शर्मा

एक युद्धनायक कर्नल रविन्द्रनाथ

सन् 1999 कारगिल-युद्ध तोलोलिंग पहाड़ी पर जंग जारी थी, तोलोलिंग की वो पथरीली पहाड़ी पूरे युद्ध के दौरान हुई कैजुल्टियों में से लगभग आधी कैजुल्टियों के लिए जिम्मेदार थी। कारगिल की सबसे पेचीदा, मुश्किल , और खूनी जंग यहीं लड़ी गई थी। Artillery support के बगैर ही। 18 ग्रिनेडियर और 16 ग्रिनेडियर बटालियनों ने बेहिसाब नुकसान झेला था।

केवल एक दिन के Acclimatization मौसम और टैरेन के अनुसार ढलने की एक मिलिट्री टर्म के बाद ही बटालियन को लांच करने प्लानिंग उनके कमाडिंग ऑफिसर Colonel & MABA Ravindranath ने की थी। कर्नल रविंद्रनाथ ने बटालियन के चुनिंदा 80 एथलीटों और आफिसर्स की चार टीमें बनाकर उन्हे युद्ध के लिए तैयार किया, वास्तव में ये एक आत्मघाती मिशन था।रात को आठ बजे Final assault से पहले Peptalk में कर्नल रविन्द्रनाथ ने अपने 80 सूरमाओं से कहा कि-

मैं तुम्हारा CO हूं और तुम्हीं मेरा परिवार हो, तुमने बटालियन के लिए खेल के मैदानों में मैडल ही मैडल जीते हैं। तुमने जो भी मांगा मैंने दिया। क्या मैं तुमसे अपने लिए एक चीज मांग सकता हूं? जवानों के आग्रह करने पर रविंद्रनाथ ने लगभग चीखकर कहा तो मेरे बच्चों! आज मुझे तोलोलिंग दे दो। रविन्द्रनाथ ने असाल्ट टीम को इतना ज्यादा Emotionally charged कर दिया कि सूबेदार भंवर लाल भाखर पेप-टॉक के बीच में ही बोल पड़ा सर! आप सुबह तोलोलिंग टॉप पर आना, वही मिलेंगे। फिर जो कुछ हुआ वो भारत के युद्ध इतिहास का सुनहरा पन्ना है, घमासान और खूनी संघर्ष के बाद सेकेंड बटालियन द राजपूताना राईफल्स ने ऊंची चोटी पर बैठे 70 से ज्यादा पाकिस्तानियों के हलक में हाथ डालकर 'विजयश्री' हासिल तो की मगर बहुत बड़ी कीमत चुकाकर। चार ऑफिसर्स, 05 JCO's और 47 जवानों को तोलोलिंग की पथरीली ढलानों ने लील लिया था, और लगभग इतने ही गंभीर रूप से जख्मी थे। बलिदान की इस निर्णायक घड़ी में महानायक बनकर उभरे थे कर्नल रविन्द्रनाथ, जिन्होंने अपनी बटालियन को ऐसे मोड़ पर कमांड और लीड किया, बड़ी कीमत चुकाकर देश को वो यादगार पल दिया, जिसे Turning point of the kargil war कहा जाता है।केवल इसी लड़ाई ने कारगिल युद्ध का पांसा भारत के पक्ष में पलट दिया था। मगर कीमत भी नाकाबिले बर्दाश्त थी मेजर आचार्य, मेजर विवेक गुप्ता, कैप्टन नेमो, कैप्टन विजयंत थापर,सूबेदार भंवरलाल भाखर, सूबेदार सुमेर सिंह, सूबेदार जसवंत , हवलदार यशवीर तोमर, लांस नायक बचन सिंह उनमें से थे, जो सुबह का सूरज नहीं देख पाये। नायक दिगेन्द्र कुमार ने वार-ट्रॉफी के तौर पर पाकिस्तानी सेना के मेजर अनवर खान का सर काटकर रख लिया। मेजर विवेक गुप्ता और नायक दिगेन्द्र कुमार महावीर चक्र से नवाजे गये,

जबकि कर्नल रविन्द्रनाथ, हवलदार यशवीर, सूबेदार सुमेर सिंह को वीर चक्र से नवाजा गया। युद्ध की सफलता का सेहरा, कर्नल रविन्द्रनाथ के सिर बंधा जिसके वो हकदार भी थे। लडाई के बाद कर्नल रिटायर हो गये, मगर तोलोलिंग की चोटियों पर शहीद हुए जवानों के परिवार जनों के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रत्येक शहीद के बच्चों और विधवाओं से वो नियमित संपर्क में थे। उनके बच्चों की स्कूलिंग विधवाओं की पेंशन, बूढ़े बुजुर्गो की चिकित्सा के सारे मामले उन्होंने खुद संभाले। मिलिट्री स्कूल छैल धौलपुर और अजमेर में उन्होंने शहीदों के बच्चों की बेहतर पढ़ाई और व्यक्तित्व निर्माण का जिम्मा उठाया। तोलोलिंग पर शहीद हुए LMG गनर लांस नायक बचन सिंह के पुत्र हितेश कुमार ने हाल ही में जब इंडियन मिलिट्री ऐकेडेमी देहरादून से अपने पिता की बटालियन में अफसर के तौर पर कमीशन लिया, तो उनकी माताजी श्रीमती कमलेश बाला मुक्त कंठ से बेटे के कमीशन का श्रेय कर्नल साहब को दे रही थी। उन्होंने शहीद हुए सैनिकों के बच्चों को कभी अकेला नही छोड़ा। नियमित रूप से उनकी समस्याएं सुनकर समाधान के लिए सदैव प्रस्तुत रहे। सैनिक स्कूल बीजापुर के इस पूर्व छात्र और Stalwart officer के तौर पर फेमस, कमांडर ने 7 अप्रैल को असमय दुनिया को अलविदा कह दिया, Military annals में बेहद योग्य कमांडरों के तौर पर प्रसिद्ध एक युद्धनायक दुनिया से रुखसत हो गया चुपचाप। नेशनल मीडिया तो छोड़िये, सोशल मीडिया तक में कोई खबर, शोक संदेश या कानाफूसी तक नहीं।

◆◆◆

नारी युग के आगमन की शुरूआत

... डॉ0 जगदीश गांधी

अनेक महापुरूषों के निर्माण में नारी का प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान रहा है। कहीं नारी प्रेरणा-स्रोत तथा कहीं निरंतर आगे बढ़ने की शक्ति रही है। प्राचीन काल से ही नारी का महत्व स्वीकार किया गया है। हमारी संस्कृति का आदर्श सदैव से रहा है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जिस घर में नारी का सम्मान होता है वहां देवता वास करते हैं। नये युग का सन्देश लेकर आयी 21वीं सदी नारी शक्ति के अभूतपूर्व जागरण की है। मेरा विश्वास है कि नारी के नये युग की शुरूआत हो चुकी है। महिला का स्वरूप मां का हो या बहन का, पत्नी का स्वरूप हो या बेटी का। महिला के चारों स्वरूप ही पुरूष को सम्बल प्रदान करते हैं। पुरूष को पूर्णता का दर्जा प्रदान करने के लिए महिला के इन चारों स्वरूपों का सम्बल आवश्यक है। इतनी सबल व सशक्त महिला को अबला कहना नारी जाति का अपमान है। मां तो सदैव अपने बच्चों पर जीवन की सारी पूंजी लुटाने के लिए लालायित रहती है।

समाज में आज चारों तरफ कम उम्र की लड़कियों तथा महिलाओं पर घरेलू हिंसा, रेप, बलात्कार भ्रूण हत्याएं आदि की घटनाएं पढ़ने व सुनने को मिल रही हैं। टीवी चैनल, इन्टरनेट, मीडिया, सिनेमा जैसे सशक्त माध्यमों से तीव्रता के साथ परोसी जा रही अश्लीलता विशेषकर बाल एवं युवा पीढ़ी के मस्तिष्क में बहुत बुरा प्रभाव डाल रही है। बाल एवं युवा पीढ़ी हिंसा एवं सैक्स में डूबती जा रही है। इस महामारी से बाल एवं युवा पीढ़ी को समय रहते मुक्त कराना जरूरी है। आज हमारे विद्यालयों के साथ ही माता-पिता को यह प्रश्न विचलित कर रहा है कि घरों में और बच्चों की पढ़ाई के कमरों तक में टेलीविजन एवं इन्टरनेट के माध्यम से नारी का घोर अपमान किया जा रहा है। उसे कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा बाजारू वस्तु की तरह समाज में परोसा जा रहा है, जो कि घोर अपराध है। वे नारियां कितनी महान तथा सौभाग्यशाली थी जिन्होंने राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अब्राहीम, मूसा, जरस्थु, ईशु, मोहम्मद, नानक आदि जैसे अवतारों तथा संसार के महापुरूषों को जन्म दिया। प्रभु कृपा से युग-युग में धरती पर मानव जाति का कल्याण करने आये अवतारों ने मर्यादा, न्याय, समता, करूणा, भाईचारा, अहिंसा, हृदयों की एकता आदि जैसे महान विचारों को अपनाने की शिक्षा समाज को देने हेतु धर्मशास्त्रों गीता, कुरान, बाईबिल, गुरू ग्रन्थ साहिब, त्रिपिटक, किताबे अकदस, किताबें अजावेस्ता का ज्ञान दिया। एक बालिका को शिक्षित करने के मायने हैं पूरे परिवार को शिक्षित करना। सृष्टि के आरंभ से ही नारी अनंत गुणों की भण्डार रही है। पृथ्वी जैसी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र जैसी शीतलता, पर्वतों जैसी मानसिक उच्चता हमें एक साथ नारी हृदय में दृष्टिगोचर होती है।

वह दया, करूणा, ममता और प्रेम की पवित्र मूर्ति है और समय पड़ने पर प्रचंड चंडी का भी रूप धारण कर सकती है। वह मनुष्य के जीवन की जन्मदात्री भी है। नर और नारी एक दूसरे के पूरक हैं। नर और नारी पक्षी के दो पंखो के समान हैं। दोनों पंखों के मजबूत होने से ही पक्षी आसमान में ऊंची उड़ान भर सकता है। ♦♦♦

सैन्य पुलिस में पहली बार महिलाओं की होगी भर्ती

नई दिल्ली। थलसेना की सैन्य पुलिस में महिलाओं को शामिल करने की योजना को अंतिम रूप दे दिया गया। करीब 800 महिला सैनिकों को शामिल किया जाएगा। फिर हर साल 52 महिला सैनिक इसमें जुड़ती रहेंगी।

हर साल 52 महिला सैनिक होंगी शामिल

निर्मला सीतारमण के बतौर रक्षा मंत्री पद संभालने के अगले ही दिन शुक्रवार को यह फैसला लिया गया। अभी महिलाओं को सेना की मेडिकल, कानूनी, शैक्षणिक, सिग्नल एवं इंजीनियरिंग जैसी चुनिंदा शाखाओं में काम करने की इजाजत दी जाती है। थलसेना के एडजुटेंट जनरल ले. जनरल अश्विनी कुमार ने बताया, इस फैसले को थलसेना में लैंगिक बाधाओं को तोड़ने की दिशा में अहम कदम के तौर पर देखा जा रहा है। इससे लैंगिक अपराधों के आरोपों की जांच करने में भी मदद मिलेगी। इस जून में ही जनरल बिपिन रावत ने कहा था कि महिला जवानों को मोर्चे पर उतारने पर विचार किया जा रहा है। एजेंसी

Apply for Admission | Apply for Job | FDP | Academic Calendar | Library | Women's Grievances | Anti Ra...ng

Abhilashi University

(Join Us To Beat The Crowd)

01907-250407, 9418056520

registrar@abhilashiunivers

Approved By: H.P. Govt., UGC, CCIM, AICTE, PCI, BCI, ISO 9001:2008 Certified, Member of AIU

Home | About Us | Academics | Admissions | Mandatory Disclosure | Quick Links | Publications | Contact Us

ADMISSION OPEN: 2019-20

:: COURSES OFFERED ::

B.Tech
CE, ME, CSE

B. Pharmacy
M. Pharma
D. Pharmacy
M.Tech
CE, ME, CSE

B.Sc (Med. & Non Med.)
M.Sc in Zoology
Chemistry & Mathematics
MBA, MA Education

HIGHLIGHTS:

- Only Private University in State run by Himachalis
- Best Developed infrastrucutre
- State of the Art classrooms & Labs
- Well stocked library
- Big playground
- ATM facility in the campus
- In Campus Hospital & Ambulance
- 24x7 resident Doctors & Security
- Own 60 Beded Hospital

SUNDAY/ HOLIDAY OPEN

Apply online log in: **www.abhilashiuniversity.in**

Contact for admission:
98164-00520, 9418056520, 94184-53239, 98162-42139

Admission Helpline:
01907-250406, 250407

Website: www.abilashiuniversity.in,
Email: abhilashigroup@gmail.com

Chail Chowk, Tehsil Chachyot, Distt. Mandi (H.P.)-175028

With Best Compliments from:

Yogesh Kumar

NEHAL KEEMAY ASSOCIATES

Darla Ghat, Distt. Solan (H.P.)

With Best Compliments from:

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)

Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

With Best Compliments from:

Hero

DEEKAY HERO

Prashant Vaidya

Partner

98171-70007, 98160-25825

नासा के रोवर चैलेंज में छाए भारतीय छात्र

... -संगीता कुमारी

अमेरिका अंतरिक्ष एजेंसी नासा की सालाना प्रतियोगिता ह्यूमन एक्सप्लोरेशन रोवर चैलेंज में भारतीय छात्र छाए रहे। भारत की तीन टीमें इस प्रतियोगिता में पुरस्कार जीतने में कामयाब रहीं। उनकी झोली में चार पुरस्कार आए। यह प्रतियोगिता हाईस्कूल और कॉलेज स्तर के छात्रों के लिए होती है। इसमें भविष्य के चंद्रमा, मंगल और अन्य अंतरिक्ष अभियानों के लिए रोवर बनाने की प्रतियोगिता होती है। नासा ने एक बयान में कहा है कि उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद स्थित आइईटी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट ने 'एआइएए नील आर्मस्ट्रांग बेस्ट डिजाइन अवार्ड' जीता है। मुंबई के मुकेश पटेल स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एंड इंजीनियरिंग ने फ्रैंक जो सेक्सटन मेमोरियल पिट क्रू अवार्ड, पर कब्जा जमाया। इसके अलावा इस स्कूल की टीम को 'सिस्टम सेफ्टी चैलेंज अवार्ड, से भी नवाजा गया। पंजाब के फगवाड़ा में स्थित लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी की टीम 'एसटीईएम इंगेजमेंट अवार्ड' जीतने में सफल रही।

जर्मन इंस्टीट्यूट पहले स्थान पर: जर्मनी के इंटरनेशनल स्पेस एजुकेशन इंस्टीट्यूट के हाईस्कूल श्रेणी में 91 अंकों के साथ पहला स्थान हासिल किया। कॉलेज श्रेणी में यूनिवर्सिटी की प्यूर्टोरिको मायागेज की टीम 101 अंकों के साथ पहले स्थान पर रही।

प्रतियोगिता के 25 साल: नासा के अनुसार, यह प्रतियोगिता 12 और 13 अप्रैल को अमेरिका स्पेस एंड रॉकेट सेंटर में आयोजित हुई थी। इसकी मेजबानी नासा के मार्शल स्पेस फ्लाइट सेंटर ने की। इस प्रतियोगिता को इस वर्ष 25 साल पूरे हो गए। ◆◆◆

भारत और नेपाल के संबंध प्राचीन

भारत और नेपाल के संबंध केवल राजनीतिक और कूटनीतिक ही नहीं वरन् चिरकालीन सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक भी हैं। जब तक भारत नेपाल सबंधों के इन सभी आयामों पर विचार नहीं होगा, तब तक दोनों देशों के संबंध नहीं सुधार सकते।' यह विचार अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के तत्वाधान में आयोजित विचार गोष्ठी में नेपाल के रेवित कुमार ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहे। शनिवार को नोएडा के सेक्टर 125 स्थित एमिटी विवि के सभागार में ''भारत-नेपाल संबंध वर्तमान परिदृश्य और भविष्य' विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा को सफल बताते हुये रेवित ने कहा कि सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक संबंधों की याद दिलाकर ही पीएम ने भारत और नेपाल के संबंधों को नई उंचाई तक पहुंचाया था।

गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप पधारे नेपाल के राजदूत दीपक कुमार ने भी भारत-नेपाल संबधों को अति प्राचीन बताते हुए दोनों देशों के मधुर संबंधों की उम्मीद जताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत के पूर्व विदेश सचिव शशांक कुमार ने की। इससे पहले पूर्व सांस्कृतिक निदेशक नारायण कुमार ने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद की भूमिका और कार्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डा0 सुरेन्द्रनाथ गुप्ता ने किया। इस अवसर पर भारत के पूर्व राजदूत गजानन वाकणकर, एन.एस.सप्रा तथा एमिटी के अध्यक्ष डा0 अशोक कुमार चौहान उपस्थित रहे। ◆◆◆

With Best Compliments from:

ADVOCATE

Vijender Negi

B.A., LLB (Advocate)

**Cell: 9805183578
9418505748**

**Office: Near AIR Colony,
Reckong Peo, Distt. Kinnaur (H.P.) 172107**

With Best Compliments from:

DOGRA

HOSIERY

BILASPUR

Industrial Area, Bilaspur (H.P.)

शुभकामनाओं सहित

मातृवन्दना के सभी पाठकों को रजत जयंती वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाईयां

प्रदेश के सभी खंड में डीलरों की आवश्यकता है। कृपया संपर्क करें:

70182-17700

महेंद्र कपूर

बढते हुए बिजली के बिल की वजह से सोलर वॉटर हीटर लागाया और मेरा पैसा ३ सालों वसूल हो गया!

टोल फ्री 1800 233 4545

SMS : SOLAR to 58888

समझदारी की सोच!

Sudarshan Saur®

35ए व 370 धारा खत्म करना आज की जरूरत है

... संतोष हेगड़े

सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश संतोष हेगड़े ने कहा कि अनुच्छेद 35ए और 370 को खत्म करने की जरूरत है। ऐसा इसलिए क्योंकि ये दोनों अन्य राज्यों के अधिकारों के विपरीत हैं। दोनों अनुच्छेदों के तहत जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त है।

जस्टिस हेगड़े ने कहा कि '1948 में जब कश्मीर के महाराजा राज्य का भारत में विलय करने पर सहमत हुए थे, तब संविधान के अनुच्छेद 35ए और 370 के तहत लोगों को कुछ आश्वासन दिया गया था।' इसके शब्द ऐसे लगते हैं, जैसे जिस पृष्ठभूमि में आश्वासन दिए गए वे स्थायी हैं। इसके बाद देश में जो घटनाएं हुई, वे दिखाती हैं कि इन अनुच्छेदों को जारी रखना संभव नहीं है क्योंकि अगर कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तो इसे अन्य राज्यों की तुलना में अलग दर्जा नहीं दिया जा सकता है।' उन्होंने कहा कि आज की स्थिति में जरूरी है कि इन अनुच्छेदों को समाप्त कर दिया जाए क्योंकि उस कानून के तहत दी गई कुछ स्वायत्तता अन्य राज्यों के अधिकारों के विपरीत है।अगर कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तो इसका दर्जा अन्य राज्यों के बराबर ही होना चाहिए। कर्नाटक के पूर्व लोकायुक्त ने कहा, '70 वर्ष बीत चुके हैं... मेरे मुताबिक उन अनुच्छेदों का जो उद्देश्य था वह पूरा हो गया है।' 'इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग नहीं है। इसलिए दोनों अनुच्छेदों का संविधान में कोई स्थान नहीं रह गया है।'

अनुच्छेद 370 भारतीय संविधान में जम्मू-कश्मीर से संबंधित है। जिसका हवाला देकर 1954 में प्रेज़िडेंशियल ऑर्डर द्वारा लागू 35ए उस राज्य में बाहरी लोगों को जमीन एवं संपत्ति खरीदने से रोकता है। ◆◆◆

मानवता की सेवा में समर्पित

तीन मिनट से ज्यादा इंतजार तो पार कर लो टोल : हाईकोर्ट

अमर उजाला ब्यूरो

चंडीगढ़।

पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने मुरथल टोल प्लाजा स्थापित करने को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई के दौरान अव्यवस्था पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यदि 3 मिनट से अधिक का इंतजार करना पड़े तो टोल पार कर लो। इस नियम के बारे में लोगों को ज्यादा से ज्यादा जागरूक किया जाए और टोल पर इसे अंकित भी किया जाए।

इस पर एनएचएआई ने दलील दी कि ऐसा कोई नियम नहीं है कि तीन मिनट के इंतजार के बाद टोल फ्री होता है। कोर्ट ने दो टोल के बीच 60 किलोमीटर दूरी के प्रावधान का पालन न होने के आरोप पर करनाल, पानीपत और मुरथल टोल का रिकार्ड तलब कर लिया है। गुरुग्राम निवासी असीम तकीयार ने

मुरथल टोल प्लाजा पर सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट का आदेश

कहा - नियम का ज्यादा से ज्यादा प्रचार करें ताकि लोग जागरूक हों और टोल पर भी अंकित करें

याचिका में आरटीआई से मिली सूचना का हवाला देते हुए कोर्ट को बताया कि एक टोल प्लाजा से दूसरे टोल के बीच 60 किमी की दूरी होना जरूरी है लेकिन एनएचएआई ही अपने नियमों को तोड़ रहा है।

जानिए रात को क्यों गाने लगा मीठू तोता

एक तोता था मीठूराम। पिंजरा ही मीठूराम का घर था और वही उसकी दुनिया। मीठूराम की आवाज बड़ी अच्छी थी पर वह सिर्फ रात को ही गाता था। एक रात जब मीठूराम गाना गा रहा था तो उधर से एक चमगादड़ निकला। चमगादड़ ने देखा कि मीठूराम की आवाज बहुत ही मीठी है तो उसने पूछा कि क्यों भई तुम्हारी आवाज इतनी मीठी है तो तुम सिर्फ रात को ही क्यों गाते हो? मीठूराम ने इसकी वजह बताते हुए कहा कि एक बार जब मैं जंगल में दिन के समय गाना गा रहा था तो एक शिकारी उधर से निकला। उसने मेरी आवाज सुनी और उसी कारण उसने मुझे पकड़ लिया। तबसे अभी तक मैं इस पिंजरे में कैद हूं। यह बताकर मीठूराम बोला कि इसके बाद से मैंने यह सीख लिया कि दिन में गाना मुसीबत का कारण बन सकता है और इसलिए अब मैं रात को ही गाता हूं। यह सुनकर चमगादड़ बोला कि मित्र यह तो तुम्हें पकड़े जाने से पहले सोचना चाहिए था। सच भी है कि कई बार हम गलतियां करने के बाद ही उससे कुछ न कुछ सीखते हैं। पर जरूरी नहीं है कि हर बार सीखने के लिए गलती ही की जाए। कई बार किसी काम को करने से पहले कुछ सावधानियां बरत कर हम गलतियों से बच सकते हैं और नुकसान से भी। तो याद रखिए बुद्धिमान वही होता है जो सोच-विचार कर काम करता है। ◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. हिमाचल प्रदेश में 17वीं लोक सभा हेतु चुनाव किस चरण में होने वाले हैं?
2. वर्तमान में हिमाचल प्रदेश के चुनाव आयुक्त कौन हैं?
3. आजाद हिन्द फौज की स्थापना किसने की थी?
4. गंगा यमुना नदी का संगम स्थल कहां स्थित है?
5. गुगली नामक शब्दावली किस खेल से है?
6. गांव के मेले में पंजीकरण शुल्क से किसे आय होती है?
7. गौतम बुद्ध के पिता का नाम क्या है?
8. ग्रामीण क्षेत्र में छोटे-छोटे मामलों का निपटारा कौन करता है?
9. घाना पक्षी अभ्यारण्य किस राज्य में है?
10. चना किस फसल के अन्तर्गत आता है?
20. भारत का 29वां राज्य कौन सा है?

पहेली

1. हरी डंडी लाल कमान
   तोबा तोबा करे इन्सान
   बताओ क्या ?
2. तीन अक्षर का मेरा नाम
   प्रथम कटे तो शस्त्र बनूं
   अंत कटे तो ज्वाला ,
   मध्य कटे तो बनु मैं आन,
   बोलो क्या हैं मेरा नाम ?
3. दुनिया भर की करता सैर, धरती पर ना रखता पैर ,
   दिन में सोता रात में जगता, रात अँधेरी मेरे बगैर,
   अब बताओ मेरा नाम ?
4. कौन सी ऐसी जगह है जहां अमीर और गरीब आदमी दोनों को कटोरी लेकर खड़ा रहना पड़ता है ?
5. ऐसा एक अजब खजाना, जिसका मालिक बड़ा सयाना,
   दोनों हाथों से लुटाता, फिर भी दौलत बढ़ती जाये !!
   बताओ क्या ?

उत्तर- लाल मिर्च, आँगन, चाँद, ज्ञान,
गोलगप्पे की दुकान

चुटकुले

1. पेपर देते समय एक बच्चा गुमसुम था
टीचर : तुम कंन्फ्यूज क्यों हो?
बच्चा चुप रहा ...
टीचर : क्या तुम पेन भूल गए हो?
बच्चा फिर चुप रहा .....
टीचर : क्या तुम अपनी रोल नंबर स्लिप घर भूल गए हो?
बच्चा फिर चुप रहा ....
टीचर : क्या तुम्हारी तबीयत खराब है?
बच्चा : चुप हो जा मेरी माँ .....
इधर मैं पर्चियां गलत पेपर की ले आया हूँ
और तुझे पेन और रोल नंबर की पड़ी है..

2. एक दरजी बस में चढ़ा
उसके पास फ़ोन आया उसने फ़ोन उठाया और बोला
तू हाथ काटकर रख
गला मैं आकर काटूंगा ..!!!!!
इतना सुनते ही पूरी बस खाली हो गयी...

3. एक भाई ने नयी कार खरीदी और पीछे लिखवाया
सावन को आने दो ....
पीछे से एक ट्रक ने उसे ठोक दिया??
ट्रक पे लिखा था ...!!
आया सावन झूम के...

हंसगुल्ले

WOODS PARK SCHOOL

(Hamirpur at Bani)

CBSE
Admissions Open
2019-2020

LKG to +2

* World Class Infrastructure
* Science, Arts and Commerce streams
* Workshops from IIT Bombay
* Special NDA coaching
* Co-curricular Advancement Plans
* English Communication Programs

Boarding & Day School

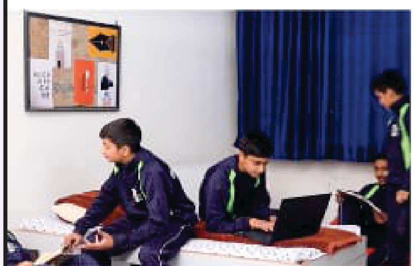

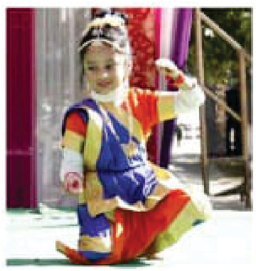

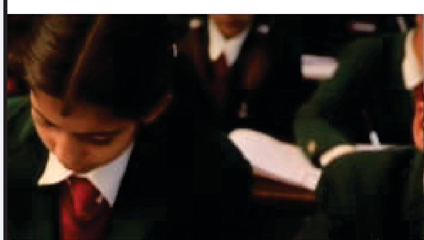

Call
9805516010/
9805034000

SCAN ME

HIMALAYA ADVENTURE HOLIDAYS

Himalaya Adventure Holidays:-

Tour programme:-
(Excluding air fare and Train fare)

Vizag with Hyderabad 7 days-13900/-
Puri with Bhubaneswar 7 days- 11000/-
Singapore 6 days 49000/-
Andaman & Portblair 7 days-18000/-
Kashmir with Vaishnodevi 10 days 19000
Bangkok Pattaya 6 days 21000
Bhutan with Siliguri 8 days 18000

OUR OWN HOTEL MANALI, SHIMLA

Web.: www.himalya-holidays.com
E-mail: himalayanadventures.holidays@gmail.com

Designed by : **New Era Graphics**, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on:

Posting Date:
1st & 5th of the Month